# روڼې شپې

ویناوال

محمد معصوم هوتک

[illegible] ش

Ketabton.com

www.hotakonline.com

(c) ketabton.com: The Digital Library



# فهرست

عنوان | مخ

==============================================


د سريزې پر ځای---------------------------------------------- 5
* چې رازونه مې سربېره نهاني وي------------------------------ 7
وداع------------------------------------------------------ 8
د نبايست مظاهره----------------------------------------- 10
د پلار تلين--------------------------------------------- 11
* چې زخمي دي په بانړو زما د سترګو مردمک سو------------------ 13
سترګي-------------------------------------------------- 14
خامۍ-------------------------------------------------- 15
مينه كه بېلتون؟----------------------------------------- 16
استاد ته----------------------------------------------- 17
اپتي كال----------------------------------------------- 19
جنون-------------------------------------------------- 20
* مينه د پاخه سړک مزل نه دئ----------------------------- 21
زړونه------------------------------------------------- 22
د استاد د راحت په اقتفاء--------------------------------- 23
* په تمه د جانان مياشتي كلونه راځه ورک سول------------------ 24
تهور------------------------------------------------- 25
د لېچو زولانه----------------------------------------- 26
تياره ماحول------------------------------------------ 27
د وينو استسقاء---------------------------------------- 28
پردۍ مېنه-------------------------------------------- 29
پرديسي مور ته---------------------------------------- 30
توپير------------------------------------------------ 32
*كه له ګل سره همراز و ، محوه كړي تماشو وي------------------- 33
بېخوندي---------------------------------------------- 34
دومره نو ، نه------------------------------------------ 35
موج------------------------------------------------- 36

(c) ketabton.com: The Digital Library



# فهرست

عنوان	مخ

========================================


را په یاد چي سپ وطنه ---------------------------------------- 38
*که د نن چاري د بخښلو نه دي -------------------------------- 40
د سخت زړو واکمني -------------------------------------------- 41
تاج اخوندزاده ------------------------------------------------ 42
مدني وحشت ----------------------------------------------------- 44
د کابل ناورین ------------------------------------------------ 46
د الفت پر پله ------------------------------------------------ 47
*ژوند خزان وهلی بهارونه لیري پاته دي ----------------------- 48
بد عواقب ------------------------------------------------------ 49
د استاد هڅونه ------------------------------------------------ 50
بې جرمه مجرم ------------------------------------------------- 52
*نبو ته نبه وایه که زما دي او که ستا دي -------------------- 54
*یا الهي مه راوینې تجزیه د ګران وطن ------------------------ 56
تالا هوسونه -------------------------------------------------- 57
روني شپې ----------------------------------------------------- 58
ارمانجني چیغي ------------------------------------------------ 59
ارمانجني هیلي ------------------------------------------------ 60
په رونو سترګو ------------------------------------------------ 62
د مزار شریف د فتح په مناسبت -------------------------------- 63
کنګل ---------------------------------------------------------- 65
فتنه ---------------------------------------------------------- 66
د خولګۍ ټکور ------------------------------------------------- 68
د مبني مینه --------------------------------------------------- 69
تنګه قافیه ---------------------------------------------------- 71
نهه توره ------------------------------------------------------ 72
زخمي نارنج ---------------------------------------------------- 73
*مه کړئ نفاق پر کرونده د ملک --------------------------------- 75
شاکي مور ----------------------------------------------------- 76

(c) ketabton.com: The Digital Library



# فهرست

عنوان | مخ

==========================================


يتيمي سلګۍ---------------------------------------------- 77
د قرن وروستۍ غزل---------------------------------------- 78
Y2K------------------------------------------------------ 79
مبارکي--------------------------------------------------- 80
د هيلو مزار--------------------------------------------- 81
مه راوينې ... (آزاد نظم)--------------------------------- 82
د اوريځو ګالري------------------------------------------ 84
*نورو که خوږ کړې، ځورولی ژړولی يم------------------------- 87
زه ولاړ ووم------------------------------------------------- 88
مازيګره ژيړې لمره--------------------------------------- 90
زندۍ---------------------------------------------------- 94
د نازولو کور---------------------------------------------- 95
*د احسان يې زما پر سر دی همېش سيورې------------------------ 96
*ما په زړه کې تصور کړل--------------------------------- 97
پښتانه ته وايم--------------------------------------------- 98
دلې او هورې---------------------------------------------- 99
*زما مينه اولنۍ د پرېښولو نه وه هيڅ-------------------------- 101
چې دا ولې؟---------------------------------------------- 102
نازم از اينکه باز چه زيبا شده پشتو------------------------------ 104
خوندونه او شخوندونه (ځلورځې)------------------------------ 105

(c) ketabton.com: The Digital Library



# د سريزي پر ځای

تعامل داسي راغلی دئ چي پر شعري مجموعو باندي له شاعر پرته نور کسان سريزي و تقريظونه کاږي، زما خو يو شعر د دې نه دئ، چي چاته دي يې ورښکاره کړم او بل مي خانمرې خوله هم د دې نه ده، چي چاته دي يې حتی د ښه او ګټور کار خواست په وکړم، ځکه مي پر خپله شعري مجموعه پخپله يو څو توري وکښل.

د دې مجموعې زياتره شعرونه ما د شپې ويلي دي، ځکه مي نوم (رونې شپې) پر ايښی دی[1]. (شپه رونول) زموږ د ادبياتو يوه خاصه اصطلاح ده د هغه چا په باب کارېږي چي يا د ېبلتانه له درده يا دميني له شوااخو نه، يا د رنځ له اسيته يا د نورو نادودو له خاطره يې خوب تښتېدلی او شپه يې تر سهاره په وينبو وهلې وي. زه د جلاوطنۍ ناورين شپو رونولو ته اړ کړی يم. په جلاوطنۍ کي مي د اولاد د نفقې برابرولو په خاطر داسي کار ته اوږه ورکړې وه او ده چي نه د سن په لحاظ ورته جوړ يم او نه د ذهن له مخې. د دې کار وخت له لمر لوېدو تر لمر ختو و او کلونه يې دوام وکړ، چي په ځنګ کي يې د نظمونو دغه مجموعه هم وزېږوله.

په دې مجموعه کي يو نيم عشقي و بزمي شعرونه هم سته چي ما د ځوانۍ پر وخت په هيواد کي دننه ويلي وو. دا شعرونه د مجموعې له عمومي روحيې سره جنداني سر نه خوري. هيله ده ښاغلي لوستونکي دغه نا هماهنګي ډېره جدي و نه نيسي.

[1] د ``رنې شبې`` په نامه د داستايوفسکي د يوه اثر پښتو ژباړه په ۱۳۶۵ش کال په کابل کي خپره سوې ده. د دې اثر روسي نوم ``ببلې نوچ`` دئ چي پښتو ژباړه يې بايد ``سپيني شپې`` وای. سپيني شپې په روسي ادبياتو کي ځانګړی مفهوم لري او زما په خيال له رونو شپو سره توپير لري. دې موضوع ته پښتو ژباړونکي (ښاغلي يوسف صابر) د سريزي په شپږم مخ کي اشاره کړې ده، خو له دې سره سره يې ``رنې شپې`` تر ``سپيني شپې`` غوره بللې دي.

(c) ketabton.com: The Digital Library



زما د شعرو هنري خوا پيکه ده او په دې نه ارزي، چې څوک دې پر وږغېږي. خو زما د ذهني حالت په تمثيلولو کې، فکر کوم، مرسته کولای سي او ما يې په همدې نيامت د چاپولو او خپرولو اراده وکړه. خذ ما صفا دع ما کدر

محمد معصوم هوتک
ټورنټو - کاناډا
۲۲ ډيسمبر ۲۰۰۳ع
د شپې دوې بجې

(c) ketabton.com: The Digital Library



چي رازونه مــي سربېــره نهانــي وي
پر مغزو باندي مي تنــدر اسماني وي
زما زړه د هغـه وخت پــه ارمان سوځي
چــي خويـونـه عادتـونـه انساني وي
د جګړې خپسکه پورته وي له مځکي
تـوغ د سـولــي رپېدلی جهــانــي وي
بيرغــونــه را نسکــوره د هغـــو وي
چي تر لاندي يې لښکري شيطاني وي
اهـريمـن کـه د کـوثـر د جام ساقــي و
خـود به خلک ليــونــي بيـابانــي وي
ماديات خـــو سراسر سرګــردانــي ده
لذتــونه را معلــوم سول، روحاني وي
د زمان و قــدرتمــن ته بــه تېښ نــسي
(که نشـه د چا په سر کي افغـانـي وي)

======

کابل
۱۳۶۴

(c) ketabton.com: The Digital Library



# وداع

پسله ډېره تحمله
پسله ډېره صبر و زغمه
پسله ډېرو منډو ځغاستو
پسله ډېر غم و ماتمه
له اوږدو چورتونو وروسته
پسله ډېر سوچه، منمه
راځه پاته دا جونګړه
راځه پاته دا کورګی دئ
======
که هر څو ده راته سخته
که هر څو ده دردونکې
سرنوست خپل حکم کړی
زمانې فیصله کړې
بخت ناخقه بدنام سوی
آسمان مخکې لا منلې
نه پوهېږم چې ناپایه
سمندر دئ په ګډ ېږم
تاسې[2] نه وینئ عالمه !
په ها زور چې زه ګوابښېږم
تاسې نه سئ درکولای
په ها اور چې زه سوځېږم
هر یو ګام مې خودکشي ده

---

[2] تاسې = تاسې یې

(c) ketabton.com: The Digital Library



هر قدم ده سره سکروټه
هر مزل راته زندان دئ
هر رباط دئ د اور ګټه
نه مي دلته ټيکاو کيږي
نه مي هلته څه اميد سته
نامعلومي خواته دورمم
نه يې ټک سته نه يې قيد سته
======
اريانا الوتکه - د کندهار پر لور
١٣٦٥ل

(c) ketabton.com: The Digital Library



# د ښایست مظاهره

مقـدر هلـه سـو عکس ستــا د څېرې
مکــدر چــې پــه جېـوه ســوې آینې
دا دې زما زړه ته د حُسن لـومـه سر کړه
کــه د خپل ښایست کــوې مظاهــرې
بوی د زلفو دې ناچل (شام پاریس) کړه[3]
چارلې عطـر ورته ښکارې بوی د پېښې
د لمر مخ له ډېر حسده سره تکــې سوه
چې ما ستا له شونډو واخستې بــوسې
چا ویــلــه چــې دا پــرخه د سهار ده؟
په کتـلــو ستــا د مـخ سو ګل خولې
بل معیــار نستــه د مینې په دنیا کې
بس هــر څـه بـه د ښایست په تول تلې
زمـا زړه دئ قلمــرو د یــوې مینـــې
ستا اختیــار کــه یې منــې کې نه منې
زه پښتــون یم دورنګې مې پېشه نه ده
په ریشتیا سره مې هو، هو ده، نې، نې
اوسنۍ مینې فقط یـــو آن هوس وي
خو عشق زما کره مبلمــه دئ د دوربې[4]
که زما د مستـــۍ بزم یو ځل تـود سو
ساقـــې ته به نـو بیا شینــې ګـروې
پام کـوه فـواره نــه ســې د وینـــو
د معصـــوم پــه زړه بیبــاکــه لاس وهې

======

کابل - ۱۳۶۵ش

---

[3] شام پاریس یو ډول مشهور عطر و په انګرېزي یې Evening in Paris بولي.

[4] (دوربه) د ژمي مسلسل باران ته وایي چې څو ورځې دوام وکړي. په دغو بارانو کي که د مبلمه یوه شپه په خیال کي وي، هفتې پاته سي.

(c) ketabton.com: The Digital Library



# د پلار تلين[5]

د بابا د فـراق تليــن مــې ايشــوي ماغـزه د سر
بابا نه و، يـو کــلا وه زمــا و سا تــه و لــوی غر
ځومره ستر عالي انسان و د ښېګڼــو لــو هستي وه
لوړ همته، نېک خصلته، نېک عملــه، دانشــور
د دنيا زيات صفات چې په بشر کي مونـدل کېــږي
په زياتـــرو متصف و، ده لـــرل پـــه يکـــړ سـر
د باطن خيره يې نه وه، سم صفا سوچه پښتـــــون و
سپين کالی و، پاک نظيف و، نوراني ښکلی بشـر
مهــربانــه پــر اولاد و، قهــر يــې ما نه و ليدلی
ترحم يـــې پـه يـو شان و، پــر ووړ زوړ د خپل ټبر
د هيواد و تـرقــي و پــرمختــګ تـه يې هوس و
پر غازي امان عاشـــق و د انګــرېــز د زړه خنجر
نازېدلـــی به همېش د خپل هيـــواد په مفاخـــرو
پــه افــکـــارو و تــر ډېـرو روښنفکـــر و منور
په څه نازيږ و م لوی کړی پــه څــه مينه يې روزلی
چي دا مات و ګـــوډ ليکمــه دئ د ده د زيار ثمـر
شپږشپېته کاله يې تېر کړل په عزت و په آبــرو کي
پرهېـــزګـــاره مـتــقـــي خــو لــه ريــا څخه بهر
ډېر ظالم رنځ ســو وربوري واک د ژبـــې څني ووت
پوره شپږ مياشتي رنځـــور و راته پروت و پر بستر
که دوا وه، که ډاکتــر و که زيارت و که تړتکــې وي
بندګـــي سعيه مـــي نــه ده سپمـــولـــې لــږ قدر

---

[5] زما اروانباد پلار حاجي محمود هوتک د ۱۳۵۲ش کال د اسد پر ۲۲مه په کندهار کي وفات سو تو پخپله پلرنی هديره کي ښخ دئ. (هوتک)

(c) ketabton.com: The Digital Library



ژوند و ژواک، کــور و کهول و راخه پاته يو مخيزه
و خدمت ته يــې ولاړ وم پـــه اخـــلاص شام و سحر
ديارلس سوه شپږپنځوس وه له هجرت څخه اوښتي
په شمسي حساب يې ټول کړ د خپل عمــر پاک دفتر
څه بې مهره دنياګۍ ده څــه ظالم خونخور فلک دئ
چي نيازمــن وو تــوـلـه ولاړل د مرګي په لوی سفر
سرښتـــه د دنيا دا ده چـي مــرګـــی به خامخا وي
مړه يې مه بولئ ژونـــدي دي که په ښه نوم وو نامور
د معصوم دا يو څو اوښکي د بابا روح ته هديه سوې
مغفرت دې وي په بـــرخــه په جنت کي يې مَـقَـــر

آمين

======

کابل - ۱۳۲۵ش

(c) ketabton.com: The Digital Library



چې زخمي دي په باڼو زما د سترګو مردمک سو
مین زړه مي نه ایمنیږي راته جوت له طفلک سو
چې په مینه کې دي ګراني د صحرا لیوني نه سوم
مجنون ګوته په غاښ کښېکښېنه، له حیرته څه هک پک سو
شاباس، شاباسي زړګیه، ته لا نه چوې له ګرومه
تاب د میني چې دي راووړ په تاریخ کې دي نوم حک سو
د غاښول څه ګناه نه ده که تک سور لکه قاتل دئ
چې د میني داغ یې وخوړ د زړه وینې یې خورک سو
د سفر شپې یې مه شمېره عافیت ورلره غواړه
پروا نسته کې له هجره عقل و فکر راڅه ورک سو
که یې زموږ ښایسته ناوې د وصال په شپه کړه کونډه
په دوی هم سو نوغی پوري خپل عمل یې پای پېچک سو
که په ستو خه لهجه ګډ دئ، په تلخي که یې مزه ده
حق ویل د معصوم جرم، ځکه نوم یې لا درک سو

======

کابل - ۱۳۶۵ش

(c) ketabton.com: The Digital Library



## سترګې

چې مــې ولیــدلــې ښکلې شهلا سترګې
ړندې سترګې مې یو دم سوې بینا سترګې
د مین مینــه لــه ستــرګــو څــرګنـد ېږي
پـه یــوه کتــو کـړي ټول راز رسوا سترګې
د مجـــرم جـــرم پـــه سترګو کې معلوم وي
د مظلـــوم مظلـــومیت کــړي نمــا سترګې
ستـــــرګـــــې نـــه دي آیینـــه جهـان نما ده
پـــه یـــوه رپ څـــاري ټـولـه دنیا سترګې
د سپین مخ ښایست په سترګو کې دئ نغښتی
غټې سترګې، بادامي سترګـــې، ستا سترګې
د ښـایـــست د دښـمنــانـــو لـــه نظـــره
خدای دي وساتي ستا ښکلې زیبا سترګې

======

کابل - ۱۳۲۵ل

(c) ketabton.com: The Digital Library



## خامي

کړېدلی چي پر اور د بېلتانه یم
د ډاکټر و د طبیب و دوا نه یم
په بېلتون کي د هستۍ مقام صوري دئ
په ښکاره که یم موجود بې له تا نه یم
زما د مرگ لام یې ترلی ورته گوره
روڼي سترگي ورته ناست یم ته وا نه یم
د ابا په خولۍ ویاړم بل څه نسته
په مثال د محمد زیود (وانه) یم
نتیجه ده د خامۍ چي فریادي سوم
د زمام پر بتۍ پوخ سوم، ښه لا نه یم
د شپیلیو په نغمو کي درته وایم
د سرېو ده نیستي چي زه شپانه یم
ما معصوم ته حق راپل لرئ یارانو!
لږ څه وروسته درځه څمه په یانه یم

======

کابل - ۱۳۲۵ش

(c) ketabton.com: The Digital Library



# مینه که بېلتون؟

چي لاهو سومه د میني په دریاب
اخته سوی یم په درد و په عذاب
په ښایسته وو کي چي بوی د وفا نسته
ډېر دقت به کړم پر بل وار انتخاب
که د میني انګار نه وای زما په زړه کي
په بېلتون کي به يې ولي وای کباب
شکایت د بېلتانه چي کړم ناپوه یم
تړوله مینه ده چي سوم په اضطراب
چي د ژوند تقویم ته مینه سوه داخله
د بېلتون د شپو يې څله کړې حساب
که دي ځان ورکړ د میني سمندر ته
د بېلتون له غوټو نسته اجتناب
د دنیا تاداو يې اینبی دئ پر مینه
د انسان ختې تې ورکړ د عشق آب
خو بېلتون سیوری د عشق سم په پسې دئ
هله نه وي، که عشق نه و آفتاب

======

کابل - ۱۳۲۵ش

(c) ketabton.com: The Digital Library



# استاد ته[6]

لوی څېړونکې، محققه، ستر استاده !
افتخار د منطقې پوهاند رشاده
جسارت دئ چې په وړاندې مو رېږېږم
بخښنه غواړم که مې کړې دا ګناه ده
دا چې نن د معرفت ډګر روښان دئ
دا چې نن لا هم خپره د علم رڼا ده
دا چې سخر ته د تحقیق وارخطا نه یو
دا چې نن مو له پردیو استغنا ده
دا چې نن په جګه غاړه باندې ګرزو
دا چې نن مو د سیالۍ برخه بالا ده
نتیجه ستاسې د زیار و د تحقیق ده
ثمره ستاسې د فضل په ریښتیا ده
هر اثر مو منتخب دئ و شاهکار دئ
هر کلام مو په مثال لکه کیمیا ده
چې تر خوله مو راوتلې ده خبره
وجیزه د بو علي ابن سینا ده
مفتیان د معنا ټول له غلې کښېنې
اوربدلې چې یې ستاسې څه فتوا ده
فرهنګیان دي له قاموس څخه بې نیازه
ورښولې مو د هر لغت معنا ده

---

[6] د ۱۳۲۵ش کال د اسد په میاشت کې زما محترم استاد او لاربنود پوهاند عبدالشکور رشاد صاحب د زړه له رنځه بستري و. زه یې پوښتني ته هره ورځ ورتلم او یوه ورځ مې د ګلانو پر ځای دا پورتنی نظم ورته ولوست. (هوتک)

(c) ketabton.com: The Digital Library



قدسيان يې په اسمان کې په شرنګ لولي
ستاسي شعـــــر يې وظيفه د هر سبا ده[7]
په څــه مينه کـــړئ د ځوان نسل روزنه
څــــومره ډېـره پېرزوينـه مو پر مـا ده
زه يـو ستـــړی لالهانده ورک لاروی يم
ستاسي شمعــه د دانش مـــې رهنما ده
افتخار چې د محضر مې ســي په برخه
زه چـې وايــم د نـړۍ پاچهــي زما ده
ما رنځـــور ته ستـاسـي هره لارښوونه
د حاذق طبيـــب نسخـــه ده او دوا ده
ستاسي حق نه ادا کيــږي په ځو ليکو
د احسان تـــر درانه بار مـي کـږه ملا ده
يو خـو زما ژبــه رخنــه، قلـم پـخ دئ
بل نېستـــې د بضاعت مې هم په خوا ده
دا نيمګړي څو بيتـــونه مـې هديه دی
د ژور ارادت بـــرخـــه پـر بـالا ده
په ساړه باد مو خدای مـه وهه فاضلـــه
د معصوم په شپـه و ورځ دغـه دوعا ده

======

کابل - ۱۳۲۵ش

---

[7] دغه بيت د حافظ شيرازي د دغه بيت ژباړه ده:
صبحدم از عرش می آيد خروشی عقل گفت
قدسيان گويی که شعر حافظ از بر ميکـنـد

(c) ketabton.com: The Digital Library



## اپټي کال

دا پـه ختـمه ادمــزاد دي کـه پېــريان دي که جنات
لــوټېــده پـه سيـالــي کاندي، د مرګو مسابقات
نه يې رحـم سته په زړو کې، نې حيـا زموږ له کروږو
د مظلومـو اوښکو جوړ کړ آمـو سيند ، نيل و فـرات
اپټــي کـال دئ د (وَسَــي)[8] لعنتـــي هښمــه راغلې
تول حاصل يــې راڅـه يوور دې بـــې وخت برسات
چې زندې د ظالمانو واک د خولې راڅـخه واخيست
تــرشــح د وينــو ســر ســوه د بـدن تــر مســامات
زما قدرت د مېږي نستــه، راته پروت د هاتي بار دئ
زه اريان عـادي ســړی يـــم کلـه کـړای سم کرامات

======

کابل - ۱۳۶۵ش

---

[8] وَسَه: د دوبي باران، پشکال

(c) ketabton.com: The Digital Library



# جنون

په در د میخانــه کــې د تقــوا سپاره پیاده ســي
د خال په ځلېــدو گــوره محــراب آتشکــده سي
په ډېرو تقــواگانــو مــې سوه وچه د ژوند درخته
ایلــه کــه د شــرابــو په سیند بیرته زرغونه سي
ما ، مینــه د ښایست وو لنــډ مــزل تصــور کړئ
کلــونه دي په کار چــې دا اومــه مېوه پخــه سي
د عشق ورږ چې په پوري سي ناسور سي لاعلاج سي
لــه تاوه ځه د مینــې زوردانــه د تک دانــه ســي
د ختــې قصــور نــه دئ، د معمار مهارت غــوارې
چې یو ځای گلخانه، بل د لالــو ملنگ تکیه ســي
ناخوالو د رقیب چې مې بیــده احساس راویښ کړ
قلم مې لیــونــی ســي هر غـــزل مې قصیده سي
هــر بیت هــره مصــرع مــې د خوږمن زړگي دوا ده
علاج تــه د لچنــو ستــرگو جــوړه مامبــره ســي
طالع ده که بل ځه دي زما په بــرخه یې نیستي کــړه
چې ډک دریاب ته لاس کړمــه خالي تشه پیاله سي
معصوم چې گناهگار سو لــه دا نورو گیله نستــه
اسـلام به چیري پاته وي چــې کـفر پر کعبــه سي

(العیاذبالله)

======

کابل - ۱۳۶۵ش

(c) ketabton.com: The Digital Library



مینــه د پـاخــه ســړک مـــزل نه دئ
غـرونــه دي پېـــچومي کږې لاري دي
عقل وای[9] اثبات د میني څــه شي دئ؟
زړه وایــی زمــا د وینـــو داري دي
تا د استغنـا نیـلـی ځیـن کـړی دئ
زما درته زاری دي او کــوکـــاري دي
خیر که نن مغلوب ستـــا په افسون یمه
جنګ تــه مـــې سبـا توري تیاري دي
حسن چـــې متـــاع د بازارو نــه وي
هغـه زمــا د مینـــې خـریـداري دي
ستا که د راتلو خیال پر نېستی حساب
زما د انتظار شپـې بــې شمــاري دي

======

کابل - ۱۳۲۵ش

[9] وای = وایي

(c) ketabton.com: The Digital Library



# زړونه

وایـــي چـــي فــرمـــان د زړه پـــر تــول بــدن چلېږي
زړه هغــه جــونــګــړه چـــي پــه مینـــه ابــاد ېـــږي
(سپین زړه) د صادق زړه، د دروه دغل به پکي نه ویني
بل کـــه رډ دروا غ وایـــي لا هـــم یــې زړه ته لوېږي
(مات زړه) د مایـــوس زړه چــي زمان پر مخ وهلئ وي
بخت مـــي وای نتلـــی ډک دریـــاب راتـــه تشېـــږي
(تور زړه) بد ګـــومان زړه صفایي یـــې محوه سوې وي
لاس که پر قـــرآن ږدي لا هـــــم یـــې باور نــه کیږي
(لوی زړه) د زړه ور زړه چـــي پـه غېږ د حادثـو ورځي
غـــر کـــه یـــې مانـــع وي لا هـــم نه وارخطا کیږي
وصف د ظالـــم چـــي وایـــي (زړه یې د ډبري دئ)
مخ تـــه کـــه یـــې ســـل سرې حلال کړې نه ډاربږي
مینــه کـــه غـــالبـــه سوه، دا زړه بوله (نازک زړګی)
لـــږ څـــه یـــې پلمـــه سي، کرۍ ورځ درته زړیږي
(خوږین زړه) هغـــه زړه چـــي په لمبو دانتقام سوځي
وینـــي د غلیـــم چـــي لا هـــم ورکړي، نــه سرېږي
هغـــه زړه (پـــوره زړه) چـــي دنیا یې بې شمـار وي
پټ په میـــړنـــو وي، شا یـــې غـــره تــه نــه بیـــرېږي
(شین زړه) د مظلوم زړه چـــي ناخوالي ډېري وویني
نخښه د ګـــوزار ده، کبـــود رنګ چـــي معلومیـــږي
زړه که جسور نه و د (کوچنـــــي زړه) په نامه وي یـاد
سمه صفا لار ورتـــه ګرنګ ښکـــاري، تـــرهیـــږي
زړونه ســـــوه څو ډولـــه، د معصـــوم فیصله دغه ده
سپیـــن زړه کـــه د چا و، تـــل پـــه ښه نامه یاد ېږي

======

کابل - د ماښام ۲ بجې - د وري لومړۍ ۱۳۲۲ش

(c) ketabton.com: The Digital Library



# د استاد راحت په اقتفاء

(تا تصـــورکــي رابلل غـــوارم
نــوې دنيــا ابــادول غـــوارم[10])
په عـــــواطفـــو د مين زړګي مي
غـــرور د حســـن ماتـــول غـــوارم
چي يې ممنون سم د خندا پــه احسان
شعري احساس مــي تخنـــول غوارم
د سپين تنـــدي د ننـــداري په اسره
د تـــورپيکـــي رالنـــډول غـــوارم
خومره چادي چي وای سرکښـــه مينه
په نصيــحت ارامـــــول غـــــوارم
که مجازات يې وي د شـــونډو دوزخ
روژه د صبـــر ماتـــــول غـــــوارم
د مـخ ګـــلاب يــې د حيـــا پــه شبنم
د وصل شپــه کــي لمبـــول غـــوارم
هجـــر مبلمـــه ســـو ورته خاندم به نور
د ښنتـــو دود پـــر ځای کول غـــوارم
د (راحت) شنخته د (معصوم) پر غزل
په نيک شګـــون سينګارول غـــوارم

کابل - ۱۳۶۲ش

---

[10] د اروانباد راحت زاخېلي پر دغه بيت مشاعره جوړه سوې وه، زه خو مشاعرې ته چا نه وم ور بللی، خو شعر مي جوړ کړ. (هوتک)

(c) ketabton.com: The Digital Library



په تمه د جانان مياشتي کلونه را څه ورک سول
تروږمۍ کي د هجران يې وصالونه را څه ورک سول
په سترګو مي لړ پوه کړه چي هوس دئ او که مينه
ګرم نه يمه ښايسته وو ، پټ رازونه را څه ورک سول
زما خيال و چي قاصد ته به په زېري کي سر ورکړم
جنون ته خو مو پام دی، سوغاتونه را څه ورک سول
رسمک مي د بابا دئ چي جنت سودا کومه
د شونډو په انګار کي دوزخونه را څه ورک سول
سمسور بڼ مي د ميني د جفا سېليو لاښ کړ
اغزي يې دومره ډېر سول چي ګلونه را څه ورک سول
څپو د حوادثو يم اخيستی نه پوهېږم
نې سر سته، نه يې ښکر سته، ساحلونه را څه ورک سول
د ميني په قانون کي خو شکوه غټه ګناه ده
په عشق کي ملا کوچنی سوم معيارونه را څه ورک سول
شاعره لېونتوب دئ چي سراب ته يې په تمه
موږ هم په دې نيامت تلو خو ښارونه را څه ورک سول

======

کابل ۱۳۶۶ش

(c) ketabton.com: The Digital Library



## تهور

د زړه مينه مي ګورئ چـــي خوندي ده په انګار کي
نمـــروده پـــر دا عصـــر بل آذر نـــه يم نـو څه يم؟
ځلاند احساس مي وينئ چي غالب پر توره شپه دئ
له لمـــر سره پـــه نـــور کـــي، برابر نه يم نو څه يم؟
شمال[11] و حـــوادثـــو تـــه مـــي کلکـــه سينه سپر ده
په عـــزم و اراده کـــي اوچت غـــر نـــه يم نو څه يم؟
بقا مـــي ده مـــوندلي پـــه څپو و پـــه موجو کي
په سختـــو تـــوپانـــو کي شناور نه يم نو څه يم؟
د زړه کوتـلـــي وينـــي مـــي مايـــه ده د مستيو
د سرو شونډو ګـرمـۍ ته ډک ساغر نه يم نو څه يم؟
د سپين مخ خـــزانـــه چي يې د زلفـو ښامار ساتي
خالي لاس پـــر مين سـوم دلاور نـه يم نو څـه يم؟

======

کابل - ۱۳۶۲ش

[11] مقصد روسيه ده

(c) ketabton.com: The Digital Library



# د لیچو زولانه

چې تر غاړه مې را تاو د سپینـــو لېچــو زولانه سوه
آرام ژوند پر ما حرام سو ، کور د میني جېلخانـه سوه
مړوندونه تر سر لاندې، د کوڅو سیوري پـرې باندې
سر تر پایه مینـــه مینـــه، یارانـــه پـــر یارانـــه سوه
د ښکلا د معجون زورو ، پښتنې سترګې درنې سوې
تېتېده خو بې ګناه وه، په شوګیر مې کړی شپه ســوه
عاشقـــې څــه ښـه مسلک دئ، مینتوب عجبه رشه
عاقبت یې لېونتـــوب دئ، په جنون یې پیلامه سوه
په ځلـــور سره مذهبـه یـــې بانړو قصاص طلب دئ
د ازل د کاتب کښلـــې ورته خـــوشې بهـــانـــه سوه
په جاهل امام پســـې وم چـــې لـه مینـې وم خواتورې
د سینې پر حریم باندې مې د سهــــوې سجـــده سوه
د مجنـــون نکل یې زوړ کړ د فـــرهاد کیسه مردوده
زما عشقه درواري سم، عالمګیـــــر دې افسانه سوه
معصوم هیڅ ګناهکار نه دئ، تقوا ســـوزې مینې ړوند کړ
جنتـــې باغ ارام یـــې، تـــر نظـــر د اور شبلـه سوه

======

کابل - ۱۳۲۷ش

(c) ketabton.com: The Digital Library



# تیاره ماحول

په تیاره ماحول کې ناست، زړه مې نرې
په خپل کور، پــه خپل وطن کې یم پردی
خدای ناترســو اورشو دومره کړله تنګه
چې هر پل ایــږدم تــر لاندې وي اغزی
په امید د روڼ سبا مـــې ترخه نوش کړل
په ارزو د پتمـــن ژونــــــد وم لاروی
نن منــزل هـــر ګوره لېرې راته ښکارې
دا پـــه دې چـــې نـه لـــرو د سر سرې
حوادثو ته چې ګورم، پای یـې وران دئ
دا وطـــن د ژوندون نــه دئ یـــو ګـــړی
دا خــه لـــوبـــه زمانـــې ده شروع کړې
خوږ ژوندون مو سو د مالګې مالګوبې
د معصـــوم د زړه ښیښه وینـــم ماتیږي
مګر خدای یې کړې له غیبو خـــه پترې

======

کابل - ۱۳۲۸ش

(c) ketabton.com: The Digital Library



# د وينو استسقاء

دا راغلـــى څـــه ناوريـــن دئ نن سبا
لـــه سهـــاره تـــر ماښامـــه په غوغا
تـــه بـــه وايـــې خلک ټوله راغونډ سوي
کـــړي د وينـــو و باران تـــه استسقاء
مرگى سمدم راپسې دئ لکه سيـــورى
هـــر گـــړى مـــو ده پـــه وينو کـــي لمبا
د قدرت هوس يې ستـــرگي ړنـــدې کړي
د شيطان په ټونگ درست وژني بې گناه
چي مقدور نه وي نجات پکښې د خلکو
لـــگـــومـــه پـــه نظـــام تـــوره بـــلا
اوربـــدلـــي مـــي کيسه د کفن کښ وه
نن يې وينم، ســـر تـــر پايه سوه ريښتيا
جرم يې و ښيئ، پـــه څـــه باندي مجرم دي
چـــي مـــدام دي پـــه ژړا پـــه واويلا

======

کابل - ۱۳۲۸ش

(c) ketabton.com: The Digital Library



# پردۍ مینه

په پردۍ مینه کې اوسم راڅه ورک خپل مرز و بوم دئ
ځالګۍ د باز ویجاړه کورګۍ جوړ باندي د بوم دئ
زما وطن، زما کندهاره لویشت لوېشت خاوره دي جنت ده
د کوڅو متې دي اکسیر دئ، د رنځورو زړو او دوم دئ
دلته هر څه بېګانه دي، دلته هر څه ناآشنا دي
هر غاټول هر نسترن او هر ګلاب لکه زقوم دئ
نې ښایست، ښایست ته ورته، نې خوښي خوښۍ ته پاته
پر بدرنګو و بدشکلو باندي پروت د ښکلا نوم دئ
نه مستي وینم په جام کې، نه محفل ډک له رندانو
د کاختۍ د کال ساقي دئ له ګنډېر څخه ډک خوم دئ
ملامت نه دئ یارانو چې په وینو درته ژاړي
مقدس هیواد تري پاته، ناورین ځکه پر معصوم دئ

======

۱۳۲۸ش

(c) ketabton.com: The Digital Library



## پردېسي مور ته

اې زما پردېسي، زما زهيرې مورې !
په فرسخونو راخه ليرې مورې !
منم کړېږې په فراق د اولاد
تپاک د زړه دې ګوتې کلوچې کړلې
منم خوتيږې د هجران په لمبو
چينې د سترګو يې دروچې کړلې
احساسومه ستا د اوښکو ګرمي
احساسوم دې د مات زړه دردونه
رايادومه ستا د ناز خبرې
را په زړه کيږي تېر خواږه وختونه
رامعلومېږي ستا د ستونې تلخې
راته واضع دي ستا پنهان رنځونه
راته څرګند ستا آرزو و ارمان
ها ستا خبره د "تور مخ زيارونه"
خو زما پردېسي ! زما زهيرې مورې !
په فرسخونو راخه ليرې مورې !
ملت اخته دئ له پرديو سره
جګړه ده، جنګ دئ خوشې ټوکې نه دي
دا د مرګو د برسات تنا ده
د بهارونو نغمې کوکې نه دي
دا د خونې سمندر توبښ په هوا
پاس په اسمان کې سوې د مرګ وريځې
را اوروي د سرو ګوليو باران
شنې يې کړې يو مخې د مرګ بوروځې
دا پرلکۍ د شياطينو سپرو
په زرو ميندې راته بورې کړلې
زامن يې ببل کړله له ميندو پلرو
په مخ سپېرې يې ښايسته حورې کړلې

(c) ketabton.com: The Digital Library



موري ! يوازي ستا ښېلتون نه سوځي
يوازي ستا پر سر لمبې نه څرخي
دا سرنوشت دئ د زرګونو مېندو
يوازي ستا پر سر اړې نه ګرځي
آې زما پردېسې ! زما زهيري موري !
په فرسخونو راڅه ليرې موري !
دوعا کوه چې دا د مرګ د قاصد
لاسونه لنډ سي له وطنه څخه
ټول سي تېغر د ماتمونو د غم
نېستي سي واک له اهريمنه څخه
چې پنځه وخته خدای ته لاس پورته کړې
ورڅخه غواړه آرامي د وطن
د اتفاق و اتحاد خواست کوه
غواړه له خدايه نېکنامي د وطن
لېرې يې مه ګڼه زما ګراني موري !
چې دا نغرى به يو وار بيا تود ېږي
پر دې وطن به د ملت په موټو
د خوشالۍ ملي سرود ږغيږي
لېرې يې مه ګڼه زما ګراني موري !
چې لاس به لنډ سي د پردو له ملکه
سمسور به بڼ سي پر دا ورانه مېنه
ټول به بساط سي د اغزو له ملکه
ستا د کلونو د زيارونو ثمر
سره راغونډ به سي، را ټېک به سي ټول
ستا د پلو سيوري دې نه ورکيږي
تر لاندې غونډ به سي ستا کور کهول

انشاء الله تعالى - فان مع العسر يسرا ان مع العسر يسرا

======

کراچي - ۱۳۷۰ش

(c) ketabton.com: The Digital Library



## توپیر

مغـزونـه سـره یـو دي پـه فکرونو کي توپیر سته
په سترګو کي فرق نسته دیدنونو کي توپیر سته
لیلا ده، که شیرین ده، که دُرخو ده، که رامین ده
د عشق کیسه یوه ده په نـومـونـو کي توپیر سته
د حُسن پر تقدیس باندي هیڅ راز اختـلاف نسته
ښکلا یوه ښکلا ده، تعبیـرونـو کـي توپیر سته
د مینـــي په عظمت کي شک شهبه نسـتــه عالمه
خبره ده پر دې چي په عشقـونـو کـي توپیر سته
ښېلتون دئ که وصال دئ پرده پسي ده که حضر دئ
یو مخ ټول شواخون دئ په دردونو کي توپیر سته
پښتـــون له پښتــه یو دئ د یوه نیــکه اولاد دئ
دا څه مالیخولیا ده؟ چي قومـونو کي توپیر سته
د وینو سور سېلاب زمــوږ پـــر مېنه رراوان دئ
سورنا د غم ږغېږي په تالـونـو کـي توپیر سته
په راز راز ادعاګانــو یــې غلط نـه سئ زلمیو !
جګـــړه پـــر اقتــدار ده بیانـونو کي توپیر سته
هدف د ټـولـو یــو دئ زموږ د کور خرابېده دي
د سره تور استعمار په تاکتیکونو کي توپیر سته
په نن و پـــه سبا مـــي غـولـوي مقصد یې بل دئ
نیتونـه شیطانـي دي په قولونـو کي توپیر سته
معصـــومـــه ! ټول دفتر دي د دردونو مجموعه ده
رازونه، دي نیازونه دي، شعرونو کي توپیر سته

======

ګلشن اقبال، کراچي - ۱۹۹۰م

(c) ketabton.com: The Digital Library



که لــه ګـل ســره همــرازو ، محــوه کړی تماشو وي
بلبل هلــه پــه چغـار ســي چــي لــه بڼـه آواره سي
د وصال په نشــه مستــه ، پــردېسی ته دي نظر دئ
سانحه نه وي نو څه وي، چي ښېلتون د چا مېلمه سي
نې جوهر چاته معلوم وي، نې کمال وي رابــرسېــره
که له تېکي را بهر سوه، تــوره هــله رخشنـــده سي
هيڅ يې مه باسه له خياله پر بيده احساس هم پام کړه
له ساړه نغري څه کله سرې سکروټــي را ښکاره ســي
د تېرې توري په شانــي غــوځـــول کا ، پرېکول کا
هی توبه يې له ګـــوزاره چــي قلــم د چـا وسله سي

======

کراچي - ۱۹۹۰ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



# بېخوندي

له ژوندونه مي وا نه خیست د خاشې خوند
ابادۍ کوي یو مخ د هدیرې خوند
هوسونه د وطن چي را په یاد سي
له حسرته څه ګنډېر سي زما د خولې خوند
تقاضا د سن و سال ده که څه ټکه؟
اخیستای نه سم هیڅکله له مېلې خوند
د لذت حس یې ایستلی زما له خولې دئ؟
که دئ تللی له اوبو څه د ټهټې خوند
د هجرت ژوند به و نه شمېري په ژوند کي
چي یې څکلئ وي د خپلې کاشانې خوند

======

ټهټه، کراچي ۱۹۹۰ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



## دومره نو ، نه

مال و زر يې کوترم کړي
سترګې هيڅ نه په مړيږي
حيران دومره اشتها ته
تناول هم حد لري
په روڼو سترګو يې ګورم
چي وطن مي سودا کيږي
د سکوت وار راخه تېر دئ
تحمل هم حد لري
په ښکاره د قام غمخور وي
په باطن کې ريښې کاږي
ډېر مي ځان کړلی ناګار ، خو
تجاهل هم حد لري
نه پوهېږمه ناپوه دئ
که عندي ګټهو ړوند کړي
کور دي وران سه آکور مغزه
تغافل هم حد لري
له پښتونه پيدا سوي
پښتنو شيدو لوی کړي
دا سپيتانه دي له کومه
تنزل هم حد لري
که افراط د شيطان کسب
تفريط هم هيڅ په کار نه دئ
منځلاري مي زړه لا شين کړ
تعادل هم حد لري
======
ګلشن اقبال، کراچي - ۱۹۹۰ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



## موج

پرله ځرخې پر له اوړي
سر وهي له غڅو سخرو
ځان راباسي له طغيانه
واري خوري لکه د تورو
له ها ليري څه رادرومي
د ساحل پر لوري ناځي
د آرام ژوندون په تمه
ترخوله سپين ځګونه باسي
نه دريږي نه تم کيږي
په سکون کې وايي تلخي ده
بهاند سيند دي ور ښوولي
چې په تګ کې شيريني ده
نه په شپه له تګه ولويږ
نه د ورځي پر کرار دئ
ني پروا له ساړه ژمي
نه د دوبي پر اهاړ دئ
تقدير بارور په شا کړی
رسوي يې و مزله ته
تدبير لاره ورزده کړې
سم ځارو يې و هر پله ته
روڼ مثال دئ و انسان ته
عظيم درس دئ و بيده ته
پو ښهاري يې نغمه ده
شنوا يې ده و کاڼه ته
که لاهو موجود پر پيښ سي
يا سيلاب راوړي ګرګه

(c) ketabton.com: The Digital Library

## روڼې شپې

څغلوي يې پاسته رېگ ته
ژغوري يې ښغوري يې له مرگه
آفرين دې پر همت سي
نه سو ستړې نه ستومانه
نې ارمان د ساحل پرېښود
نه له بخته سو پښېمانه
موجه زه لاهو انسان يم
څپې زه ورک لاروی يم
پر اورېه باندې مې واخله
اوس لا مړ نه يم ژوندی يم
که مې سترگې ترخو اوښکو
کړې کمزورې ړندې نه دي
که مې خپه ملگرې نه کا
لا پتليس دې ريچې نه دي
که مې لېڅې دې بېواکه
که حواس مې دې پرېشانه
خو نجات ته اميد ږ پر سته
زړه مې تور نه دئ له ځانه
د ساحل و پاسته غېړ ته
رسوه مې لا ځواني سته
اوس لا هم د چارې سر دئ
لا مې زړه کې څه مستې سته

======

کراچي - ۱۹۹۰ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



# را په یاد چې سې وطنه

چې په یاد مې سې وطنه
د نرۍ جنت ځُتنه
د ښایست و ښکلا کوره
د غیرت و ننګ مامنه
ته وا هډ مې نیني کیږي
ته وا روح مې ځي له تنه
په ژوندون ته وا ښخیږم
مرم بې ګور و بې کفنه
چې د ښتو ، رغو ته ګورم
را په یاد دي سر درې سي
هغه د ننګ د ننګ اوچت غرونه
له غاټول ډک ، له سمنه
چې ودانې مېنې وینم
را په یاد مې وران کورګی سي
زړه مې و ابشي له جوشه
وایم، تف پر تا ، د ښمنه
چې سمسوره اورشو وینم
ډک بهاند ځپاند رودونه
را په یاد مې ارغنداو سي
زړه سي تور له بل ګلشنه
چې تورې پنجابۍ وینم
را په یادي پښتنې سي
مینه ناکې، حیا ناکې
وربښمن لبځې سمین تنه

(c) ketabton.com: The Digital Library



کليوالو ته چې ګورم
را په ياد سي کوچۍ پېغلې
پر سرو يې ډک منګي وي
پر دښتو يې کږدۍ پلنه
څه ښايست دی خدای ورکړی
څه عفت يې وربخښلی
شاپېرۍ د کوه کاف ده
ورته پکه و پمنه
حورو حُسن دئ اخيستی
عاريت د دې له حسنه
د شبو ګلو وږمونه
منشعب يې له بدنه
آ د هست و نيست مالکه
را ودان مې وران وطن که
را يو موټی مې ملت که
لويه ربه، لوی ښبتنه !
======
پنجاب اورګاډی - ۱۹۹۱ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



کــه د نــن چـــارې د بخښلـــو نـــه دي
پرونـــۍ هـــم د هېـــريـــدلـــو نه دي
وطنـــه ! ودې مـــرم دا څـــه دروسوه !
چـې کنـډوالـــې دې د کتلـو نـــه دي
كه د اغـــزو پـــر ســـر حضـر دئ روان
پرډېـــې شپـــې هـــم د ګاللو نه دي
ښايستـــې نـــه يمـه خـواتـور له ميني
خـــو ستا جفـــاوې د سهلـــو نه دي
ستـــومـــانـــه نه يـم لـــه مزلـونو څخه
مـــګـــر دا لارې د وهـــلـــو نـــه دي
په زړګي تور اشنا شكمن سوې پر څه؟
زمـــا ولـــولـــې د ازمـــويـلـــو نه دي
اوښكي مې وچې سوې له ډېره ګرومه
د زړه داغـــونـــه د ښـــوولـــو نـــه دي
چينو د ستـــرګـــو جواب راكړ، وايي
دا دردانـــې د تـــويـــولـــو نـــه دي
وسواسه پرې مې ږده مكوټ دې كړمه
زمـــا تـــوبـــې د مـــاتـــولـــو نـــه دي

======

ټورنټو - كاناډا - ۱۹۹۴ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



# د سخت زړو واکمني

د وطن وطن نارې دي له هر کونج له هر کناره
چې را ژغوره يې ښتنه له دې غم له دې ناتاره
ډبرين زړونه واکمن دي، عاطفې چارماري سوي
کرامت د انسان خرڅ سو ، شرافت ټول له بازاره
عفتونه تر پښو لاندې، عصمتونه کنهګار سول
او به تللي دي له سترګو ، ټول بې آبه سول آبداره
هيلو تور ټيکري پر سر کړل، د نجات لارې کوره دي
اميدونه ټول خزان دي، ښايست کوچ سو له بهاره
ژړوي مې، ژړوي مې، ژړوي مې دا خبره
چې را پېښه له خپل وروره، له خپل زويه، له خپل پلاره
زموږ په خولو کې اثر نسته، زموږ خواستونه نه قبلېږي
تې په خوله کرم راجوړ کړې، اې قادر پروردګاره

======

ټورنټو - کاناډا - ۱۹۹۴ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



# تاج اخندزاده

کندهار کي يو عالم اخندزاده و
نکته سنجه، باريک بينه، دانسته و
د بې لارو بې لارۍ به يې ځارلې
د بې دينو بې دينۍ به يې غندلې
و اولس ته يې ښوول تول بدعتونه
په نامه د شريعت کاړه کارونه
ذميمه يې په خندا چاته ښووله
په ټکالو يې عيبونه لځوله
هر بيان يې په ظاهره ظرافت و
خو چې و به دي شانه درس د عبرت و
د اسلام په حقيقت و پوهېدلی
په منطق و په برهان کي و غښتلی
ملتفت د خپل اولس و هر عمل ته
سم ځارو و د خپل ورور و کاږه پل ته
د همعصرو د خولې ورد يې وجيزې دي
رسېدلې يې ترما لا هم مزې دي
ده به وې د انسانانو فرق په دا، سي
يو کافر دئ بل مسلم بل مورېاو تاسي
وای[12] يو وخت ورڅخه وکړه چا پوښتنه
چې اخونده ! ورک يم لاره لټومه
د عبرت خبرې کړې دي تا ډېرې
لټوم به مسلمان و اسلام چيرې؟
په حسرت يې ورته وکړ دا جواب
عالم (تاج اخندزاده) عالي جناب

---

[12] وای = وايي (د کندهار لهجه)

(c) ketabton.com: The Digital Library



(که اسلام غواړې خوندي په کتابو کې
مسلمان کـــه لټــوې گــرزه قبرو کې)
کــه ژونــدی وای نن ورځ تاج اخندزاده
څه بې حکــم وای دا زمــوږ پــر سرښته
چې د دین په نامه چور کــوو غارت کړو
د اسلام پــه نـوم د قتـل مصلحت کـــړو
د وروری پـــه نـــوم مـو واچول درزونه
د چوکۍ په حب مــو وران کـړله ښارونه
د جهـاد پـه نـوم مـو وجنگول ورونه
د تقـوی پـــه نوم مو لوټ کړل اولسونه
نفـرتـونه زېـــږوو پـــه پاکـــو زړو کې
دښمنـــۍ را پاڅـــوو ځـوان و زَړو کې
حســدونـه شنه کوو په کـرونـدو کې
د تبعیض پارو پــر پاشــو په بېلچو کې
خندوو نـړۍ پــر خپــل دیــن و مذهب
نـه اخلاق نـــه مـــو نېکـي سته نه ادب
======
اوکویل - کاناډا - ۱۹۹۲ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



## مدني وحشت

ما تمدن په تصور کي و ګڼلی بل شان
یوه هوسا تږولنه
یوه سالمه فضا
یو د ورورۍ چاپېریال
د کار و کسب دنیا
یو آبرومنده ژوندون
د مادیاتو له غوغاوو څخه پاکه اورشو
ما تمدن بللی
======
ما تمدن بللی
چي پکښي حُسن د بازار د سواګرو په لاس
یوه متاع د خرڅولو نه وي
چي د حیاوو په پردو کي سینګار سوي ښکلي
د ښایستونو په سیالۍ کي تر چا پاته نه وي
عفت یي حُسن، عفت ناز، عفت مکیز و خندا
او بس همدا مي وه ګڼلي مدني فرشته
او بس همدا مي و بللی انساني تمدن
======
خو، چي اوس ګورمه د پېغلو مرمرین ورنونه
د نو رسانو له جنونه ډکه تنډي سیني
د نابالغو نسیږلو سرو غوټیو پاڼي
د منفعت په نامه
د تجارت له پاره
پر بازارو لوښېږي
په څو تنګو خرڅېږي
نه څوک تويي پر کاږي

(c) ketabton.com: The Digital Library



نه څوک لاحول وايي
یوازي زه یم چي خولې سم سر تر نوکه پوري
د تودو اوښکو سېلابونه مي تر زنه تېر سي
توی سي ګرېوان ته
او د زړه سر مي مکوټ مکوټ کړي
په حسرت (اوه) له خولې څه وباسمه
د خپل ضمیر د محکمې په ازانګن تالار کي
څو غټې کړېږي وکړم
آخر، دا څه کانه مي وکړه په ځان
سپین پښتني ژوندون مي څله کړی الیش په جنون
په مدني لېونتوب
په داسي ژواک
چي د ځنګلونو وحشتونه به پر ستر ګو کښېږدي
څناوران به درته ښکاري د عزت نمونې
خو ستا به هیڅ له وسه نه وي پوره
======
افسوس افسوس چي په هیڅ راز مي غمګی نه سرېږي
نو ګلومه به یې
تر هغه وخته پوري
چي د نجات د قاصدانو راته پام سي آخر
چي په ترلې تنې
د مدني وحشت له بنده څخه خوشي سمه
د خپل هیواد پر مقدسه خاوره
د خپل مامن پر مځکه
د شکراني له پاره
دا خپل تندی پر خاورو ولګوم
======
اوکویل - کاناډا - ۱۹۹۲ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



# د کابل ناورین

هغه ناورین چې پر کابلـــو تیـــرېږي
د دوی پر تن زمـــوږ پـــر زړو تېرېږي
د زماني هـــم سپین پـــر تـــور راغلي
پر ککـــریـــو د ســـړو تیـــریـــږي
د ځوانی شپه مي په خـوبـــو تېرېده
نن د بېلتـــون پـــر شـوګیـــرو تېرېږي
ته وا اقلیـــم د دنیـــا واوښتـــلـــئ
د ګـــرمـــی فصل پـــه یخـــو تېرېږي
د پسرلـــي شپـــې اهاړینـــي سولې
ساړه د ژمـــي پـــه پکو تیـــریـــږي
نه مي لوریـــږي پر دښمن په خدا یږو
ژوندون چې سخت پر پښتنو تېرېږي
کـــه مـــي رشتیا د زړه خبره غواړې
اور په ها ژواک چې بې پښتو تېرېږي
پر هیـــوا د میشت اشنا شکرونه کاږه
د بېلتون زور زموږ تر هـــډو تېرېږي
د مرګ قاصد ســـو ماښجن راځخه
چې پر ما راسي پـــر ګوښو تېرېږي
د امید حســـه لـــږ مـــي وتخنـــوه
حوادث زښته بـــې مـــزو تیـــریـــږي
معصـــوم یـــې بله چاره نه کړه پیدا
د بېلتانـــه غم پـــه شعـــرو تېرېږي

======

اوکویل - کاناډا - ۱۹۹۲ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



# د الفت پر پله

د لیلا زړه مجنـــونـــه مـــه ماتـــوه
د پښتـــو نـــرخ پښتـــونه مه ماتوه
که په رګو کې دي ننګـــونه غورځي
خولـــه ماتـــوه قـــولـــونه مه ماتوه
که وا ، امیـــد د تسلـــۍ مـــه کوئ
دومره خو کړه چې زړونه مـــه ماتوه
د غزنوي رسمک لـــه ما څـــه پوښته
بت ماتـــوه رسمـــونـــه مـــه ماتوه
آ د خامـــوشـــو هـــدیـــرو سلطانه
عیش در بخښم تخنـــونه مه ماتوه
مغزي ماتېږي خو قام نـــه ماتېږي
جلاده ! خپـــل تېغـــونـــه مـــه ماتوه
منم مزلـــونـــه مـــو اوږده په مخکې
هلـــه درجار، ګامـــونـــه مه ماتوه
پر بـــې مالیاره باغ لـــړزړه وسوځه
ګلان شکـــوه ښاخـــونـــه مه ماتوه
غمو کړه هېـــره لـــه پستو څه خندا
هـــراتـــه ! نورشولـــونـــه مه ماتوه
له خپله توله بې[13] لـــه خـــدایه غواړو
د بل پـــر داد ســـرونه مـــه ماتـــوه
وا د قدرت جنون مې نه پرېږدي نور
سیالـــي کـــوه هـــډونه مـــه ماتوه
یاد به دي وي چې الفت څـــه ویلي؟
(سر مې وهه خیالـــونه مه ماتـــوه)

======

اکویل - کاناډا - ۱۹۹۲ع

[13] بې = به یې

(c) ketabton.com: The Digital Library



ژوند خزان وهلی بهارونه لیري پاته دي
شپې د پرېښې دي سهارونه لیري پاته دي
نې[14] په تصور نه یې په خیال نږدې کولای سم
غرونه مو تر منځ دي یادګارونه لیري پاته دي
زما د خیال بلبل چې به کړی ورځ و نغمه نغمه
نن سو رانجه خوره چغارونه لیري پاته دي
یو مخ نامردي ده نارینتوب کوچ له وطنه سو
خدایږو د مېړاني کردارونه لیري پاته دي
خوږ مې د زړګي وایي طبیب کمبښت د وینو ډک
زې[15] په سبب پوه یم انارونه لیري پاته دي
ویاړ دئ د هغو چې د وطن د لیلا غېږکې دي
سخ زما پر حال کند هارونه لیري پاته دي

======

اوکویل - کاناډا - ۱۹۹۲ع

14 نې = نه یې
15 زې = زه یې

(c) ketabton.com: The Digital Library



# بد عواقب

که ملت سره توتې سو آفتونه به پر اوري
د ږېرو و د کاڼو بارانونه به پر اوري
نېکمرغي به ځيني بار سي بدمرغي به ورته چوک وي
پرې نازلې به بلاوې، فسادونه به پر اوري
مرضونه به په ګډ سي وچکالۍ به[16] کال په کال وي
پر حاصل بې وسي کېږي، سېلابونه به پر اوري
ورته وچ به ډک درياب سي سمې لاړې ګړنګونه
هره تالنده به تکه، تندرونه به پر اوري
ظالمان به حاکمان سي هر يو ښار به پېښور وي
کور به ګور سي لا د پاسه، سره اورونه به پر اوري[17]
لوی قامونه به يې تپ سي شو به شو به اولسونه
کور په کور به يې بدې وي، تاړاکونه به پر اوري
ورور له وروره به خفه وي، پلار به قدر وي بايللی
کورنۍ به تباه کېږي، نفاقونه به پر اوري
نازولې به يې ژاړي، ايمنېدو ته به ځوک نه وي
بې علاجه به درمله پرهارونه به پر اوري
مرور به يې بختونه، طالعګاني ماڼيجنې
اسې بخت به يې مېلمه وي شامتونه به پر اوري
هم به خدای ځني ناراض وي هم به مخ تور و نړۍ ته
د رحمت به ورته شا وي، لعنتونه به پر اوري
دغه حال چې مې بيان کړ پر افغان دئ نن راغلی
خدايه ته يې سې پر زېرمه دا ملت کړې بيا ښاغلی

======

اکويل - کاناډا - ۱۹۹۲ع

---

[16] (بې) په دې نظم کې هر ځای د (به يې) مخفف توری دی.
[17] په دې بيت کې د رحمان بابا يو بيت له تصرف سره تضمين سوی دئ:
په سبب د ظالمانو حاکمانو
کور و ګور و پېښور درې واړه يو دي

(c) ketabton.com: The Digital Library



# د استاد هڅونه

استاد مې له کابله نوشتو ته هڅوي
مرغۍ په مات وزر و الوتو ته هڅوي
خبر نه یم زما په تور تندي کې څه لیدلي
چې مات زړه مې و لویو کارنامو ته هڅوي
که هر څو را خبر چې پرېښی یم سخت ځپلی
بیا هم مې توری ژبه ګرېدو ته هڅوي
د لیک په هره کرښه کې فیضونه راته خاندي
د شعر هره مصرع مې ترانو ته هڅوي
د هیلو قافله مې له سکون څخه راباسي
پر لوري د سبا یې خوځېدو ته هڅوي
یوسف د امیدونو مې د یاس له څاهه کاږي
تولۍ د ارزوګانو کنعانو ته هڅوي
ښاخونه د لاښ بڼ مې نه پرېږدي و وچېدو ته
غوټۍ د قریحو مې غوړېدو ته هڅوي
پر ما د نامېندیو پېښول دئ غوړېدلی
حسوده زمانه مې چوپېدو ته هڅوي
زما زړه د بېلتانه غمونو هسې لاندې کړی
چې یو مخ مې له ژونده هدیرو ته هڅوي
خولې سم له خجلته چې کړدې د افغان ګورم
چې ورور د ورور د کور خرابېدو ته هڅوي
ارمان کړم پر هغه چې مې ننګونه ور ستا یله
نن ټول خپل اردلیان و لوټېدو ته هڅوي

(c) ketabton.com: The Digital Library



دا څرنګه جادو دئ دا کوږدا ګي څه په وکړي؟
مصلحـــي ارادې چـــې و جګـــړو ته هڅوي
پر ما توره تياره ده سهـــار ليري شپـــه يلـــدا ده
استاد مـــې د سپېدو و چاودېـــدو ته هڅوي[18]
نو ګاله يـــې پـــه مېړانه د بېلتون درانه غمونه
معصـــومه چـــې (رشـــاد) دې آيندو ته هڅوي

======

اوکويل - کاناډا - ۱۹۹۲ع

[18] زما محترم استاد پوهاند رشاد صاحب له کابله يو ليک تورنټو کاناډا ته رالېږلی و او په هغه کې يې زه ليکنو ته هڅولی وم دا شعر د ليک د رارسېدلو په شپه وويل سو. دا شعر مي په هالينډ کي د استاد د اتيا يمي کاليزي د نماځلو په غونډه کي هم ولوست. (هوتک)

(c) ketabton.com: The Digital Library



# بې جرمه مجرم

هلتــه د دنيــا د بام پــر ســر پــه لوړو غرونو کې
دلتــه د تهن جهــان پــه کليــو و ښارونـــو کـــې
هلته په کــړېديــو کــې خپاره پــه سرو دښتونو کې
دلته په مانيــو کـــې ميشتــه خــو کــړاوونــو کې
اوسي يو اولس چې تيک يې غاړه، مــلا يې خمه ده
پاکــه يـــې سينــه لــه هــر راز دروهه له هر چمه ده

======

خوار دي پيدا سوي خو جگ سر باندي مړ سوی دئ
نه چا ته ټيټ ســوی نــه پــه ننگ چا ته پــړ سوی دئ
نــور يــې رســولــي دي تختــونو ته، تاجونو ته
دی ورتــه سپــر ســـوی دئ په وينو ککړ سوی دئ
نن د بــې دردانــو لـــه ستمــه کلک وارونه خوري
نن د تــورتمــونـــو پـــه مزله کې تيندکونه خوري

======

چا يـــې د تاريـــخ مسخــه کــولــو ته دانگلي دي
څوک وايي نــوم بدي دي چې دوی و تــه ښاغلي دي
څوک يــې پــر وياړونـو نوم نښان باندي ناگاره دي
ځيني وای دا څوک دي؟ له کوم بل ملکه راغلي دي
ټــولــو يـــوه کـــړې ده ســـلا و دې مـجنــون لره
حــــد د دښمنـــیِ يـــې رســـولـی دئ جنون لره

======

(c) ketabton.com: The Digital Library



څه يې ده ګناه؟ څــه يې تعـدی ده څه يې کړي دي؟
څه له مـــو زړه ډک دئ پـــه څـه عيب مو کړلي دي؟
دا کــه يـــې ګناه وي چي يې ميندو خپله غېږه کي
لــوی - لــوی اتلان و د ســـر خلک يې روزلي دي

جار تر داسي ميندو چي غيرت يې په شيدو کي وي
جار تـــر داسي قـــوم چي همت يې په سينو کي وي
======
جار تر داسي هيلـــو چـــي قومـــونه يو کولای سي
جار تر داسي متـــو چـــي سرکښ را ايلـــولای سي
جار تـــر دا اولس چـــي ببلـــه تمـــي و اسرې څخه
وينـــي تـــويـــوي خـــو تاريخـــونه سازولای سي
نـــورو تـــه مانـــۍ ګتـــي پخپله په کږديو خوښ
ننګ يې په سياليو خوښ، شـرنګ يې په سياليو خوښ
======
اوکويل - کاناډا - ۱۹۹۲ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



ښو ته ښه وايه که زما وي او که ستا وي
بد دي ورک سي پر دنيا که د هر چا وي
د دوستۍ هيله له دوسته څخه کېږي
دښمنۍ کې اچولې اعدا وي
هوښياران وايي ځوانمرد که دي دښمن و
پر نامرده دوست به سل برخي بالا وي
عاقبت به يې گولۍ ترزړه وخېژي
د توپک په زور که هر څوک خانتما وي
د هغه سردار به ځای د دار پر سر وي
چي په سر کې[19] د ملت پر سر سودا وي
په سکروټو يې ور داغي دواړه پښې کړئ
چي و ډول ته د پرديو په نڅا وي
چي په زور د بېگانه وو پادشاهي کا
د هغوی تخت به نسکور نن يا سبا وي
شا دې[20] نه رسي و مځکي ته هيڅکله
د ملت د کامرانۍ بار چي پر شا وي
يو سرونه غوڅوي بل سربندل کا
د رهزن و د رهبر فرق په همدا وي
و مطلب ته هم هغه طالب رسېږي
چي طلب يې په راستۍ و په صفا وي

[19] کې = کي يې
[20] دې = دي يې

(c) ketabton.com: The Digital Library



دا رنځـــور اولس پــه بل څـه نه رغېږي
د وحــدت نسخــه بې[21] رنځ لـــره دوا وي
دا وطــن به بـــې تاجکه ځوک جگ نه کا
بـې پښتونه به بیا پښت پر پښت تالا وي
هـــزاره ته چـــي د ورور په څېر نه گوري
تر هغــه بـــه بل هـــرزه فکـــر د چا وي
د ملت چپــه بېـــړۍ هلـــــه سمبېږي
چـــي د ملک تــول اولسونه همنوا وي

======

اوکویل - کاناډا - ۱۹۹۲ع

[21] بې = به یې

(c) ketabton.com: The Digital Library



یا اِلهِـــي مــه راوینـي تجــزیــه د ګران وطن
د یووالـــي دښمنـــان کړې خوار خسته د ګران وطن
سور شمال دئ خښمېـــدلی تـور بادونه دي چلیږي
رژوي د وحــــدت پـانـــي و مېـــوه د ګران وطن
ښه يې وینم چي وچیږي د وحـــدت څپاند سیندونه
ښېره سته چي سرچینــه يــې سـي کوره د ګران وطن
د هیواد دښمنان یو سول شیطانـــي دامونې[22] سر کړل
کرښې کاږي پر ښایسته ښکلــــي څېره د ګران وطن
جنګ د ژبــي يې جاري کـــړ جنګوي سکني وروڼه
ژونــدی نه پرېـــږدي هیڅکله دانسته د ګران وطن
تحمل يې ورته ګران سو چي افغان سردي اوچت وي
انتقــام راخخـــه اخلــي روسیـه د ګران وطن
د حکمت هیله ترې مه کړئ سعادت مه ځنـي غواړئ
که د رب پــر لاري نـــه تلــی سرغنه د ګران وطن
دښمنـــانــو تــوره تبـه ګـډه کړې لور پر لور ده
په دوست هم هیڅ وچه نه ســوله خوله د ګران وطن
دا قومونــه اولسونــه د یـــوې باغچې ګلان دي
په خزان يې مړاوي مــه کړې ګلدسته د ګران وطن
بهارونه دي تازه وي د وحــــدت نغمې دي سُروي
اولســـونه دي راغـونډ وي پر جــرګه د ګران وطن
چي شملـــې د افغانانــو پکښې جګې جګې وینم
دا ارمان مـــي کړې اې خدایـــه را پوره د ګران وطن

======

اوکویل - کاناډا - ۱۹۹۲ع

[22] دامونې = دامونه يې

(c) ketabton.com: The Digital Library



# تالا هوسونه

خود به خاوري بادومــه نامحــرم چـــي مخ د يار سو
خود به اوښکي تويومــه سکنــی ورور چي اغيار سو
د کلـــونـــو اميـــدونــه هـــوســـونـــو را تالا کړل
نامیندی مو مېلمنې سوې د مرګي سترخوان هوار سو
کوره کيـــږي د تلـــو لاري نسکـــوريږي زاړه پلـــونه
ښه مـــي ولوېده و زړه تـــه راځـــه پاته کنـــدهار سو
نوم يې تاسي باندي کښېږ.دئ پر ګلشن مو څه تېرېږي
چي ګلـــونه مو اغـــزي سول چي خزان مو نو بهار سو
رارسېـــږئ نازوردارو د اجـــل قاصـــدان راغـلـــل
د پښتـــــون جنـــازه وزي د پښتـــــو قبـــر تيـار سو
شوا خـــــون و ناوريـــــونه بـــربادی دي و مـــرګونه
ته به وايـــې چـــي دا ملک بس و همدې لره تيار سو
خو مره سخت ازمـــوېښتـــونه مخامخ دي و افغان ته
وطـــن ده تـــه بلا ســـوی،دی وطـــن لره تور مار سو
دا بـــه هـــم د رب حکمت و چي افغان په تورو تور سو
دا به هم د رب رضـــا وه چي تـــر خوارو لا هم خوار سو
و علت تـــې نـــــه ورلوېږم سد مي هيڅ نه په رسېږي
په دي دومـــره رهبرانـــو پښتـــون ولي بې سالار سو
تر هغـــــه به ساده څوک وي چي شاکي وي له پردو څه
رارسېـــږي له خپل لاسه چي نن (ترخه و واکدار سو )[23]
شرمنده ســـولو تـــر سياله ستـــــرګي نه لرو نرې ته
وروړ د ورور مرګي ته تږی زوی لـه پلار خخه بېزار سو
سرنوشت د انسان دا دئ چي ماتـــم بـــه يې مېلمه وي
و دنيا ته يې راتګ لـــه لـــويه ســـره پـــه کوکار سو
نامينـــدی و بيـــوزلی د وطنـــوالـــو ته چي ګوري
په زړا په غلبلـــو کـــي پر معصـــوم باندي سهار سو

======

۱۹۹۲ع

---

[23] (ترخه و پاچا ) يوه اولسي وراشه ده چي دلته له تصرف سره تضمين سوې ده.

(c) ketabton.com: The Digital Library



# رونې شپې

د وطـــن په ياد تيارې شپـــې رونومه
د شعرونـــو ډېـــوې ځان تـــه بلـومه
شپه تياره ده، تياره کړکه ده نفرت دئ
د رونـا پـــه اميـــدو يـــې تېـــرومـه

======

چـــې اوږده شپـــه وي، توره تياره وي
غـــم د هجـــران وي د بېلتـــانـــه وي
وطـــن رنځــور وي، طبيب دښمن وي
معصـــوم بـــه ولـــې پـــه ژړا نه وي

======

پـــه ورځ بيـــده يم، د شپې پر کار يم
نه چـــې حريص يم، نه ډېر پر کار يم
د زمان خـــرخ دئ چپـــه خـــرخېږي
ورســــــره خـــرخم، تـــه وا پرکار يم

======

اوکويل - کاناډا - ۱۹۹۲ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



# ارمانجني چيغې

سوځم پــه لمــبو د بېلتـــانــه پـــه پردېسۍ کې
ورځ و شپـــه ســـې تيـــره په ماتـــم په مايوسۍ کې
نه لـــرمه ځـــورې د سفـــر تـــروس مې تېره ده
کلـــه ســـې کېـــداې حـــج و عمـــره په مفلسۍ کې
نـــه وزي لـــه زړه ښځـــه د ابا د مېڼـــې مينـــه مې
ســـر تـــر نـــوکه بنـــد يم د وطن د عشق رسۍ کې
قدر د انسان خو په خپل کـور په خپل نغري کې وي
ځـــومـــره ساده ګان چـــې لټوي يې په کرسۍ کې
نه ســـم تيتـــولاې پښتنـــې مغـــزې پـــردېو ته
هر څو که يې وينم چې چړچـــې دي چاپلوسۍ کې
مه کړئ د پتمن ژوند تمه مـــه کړئ په دې خاوره کې
تو منـــه د مايـــې يې ده اخښلـــې دووســـۍ کې
نسته د پردېس معصوم په زړه کې بل ارمان په ژوند
ښخېږي چې يو وار بيا د خپل سپين سراې په اورسۍ کې

======

اوکويل - کاناډا - ۱۹۹۷ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



# ارمانجني هيلي

پر مغز مي جوپې جوپې خيالونه وي راځي
پر زړه باندي مي زښته ارمانونه وي راځي
دا خوب دئ او که خيال دئ که پر زړه مي الهامونه
و کور ته مي ځولۍ ځولۍ ګلونه وي راځي
د يار د کوڅې خيال وي په پايېږم تل تر تله
د رنځ مي مسيحا وي علاجونه وي راځي
وصال وي د يار غبږ وي مرکې د يارانې وي
د زلفو له وطنه مي وږمونه وي راځي
سيالۍ وي د مېړانې د همت مسابقې وي
ميدان ته د غيرت خيالي ډولونه وي راځي
هې هې وي د ځوانانو اتڼونه وي خوښۍ وي
نفرت پا يکو به کېږي عشرتونه وي راځي
له جهل و ناپوهۍ سره غزاوي جهادونه
له سوبې و نصرت سره توغونه وي راځي
سوبمن زلمي را درومي ناميندۍ په سانګو نجتي
پر زړو د ښمنانو حسرتونه وي راځي
لرګي يې وي پر کډو اچولي بد مرغيو[24]
له ساندو څخه خلاص کلي کورونو وي راځي
ختمېږي اهاړونه ايره کيږي نفاقونه
نغريو ته د مينې مجمرونه وي راځي
د هيلو کاروانونه وي رسېږي و مزلو ته
له ليري شرنګا شرنګ وي جرسونه وي راځي
پر د ښې پرګنې وي راستنېږي خپل کورګي ته

---

[24] (لرګی پر کډه اچول) د (بارېدلو) په معنا يوه اولسي وراشه ده.

(c) ketabton.com: The Digital Library



پـــر وچـــو شونـــډو ناست تبسمـــــونه وي راځي
رويبار پـــــر لارويـــــو د رحمت عطــــرونه پاشي
و ښكلـــو تـــه ډک گلاب جامـــونه وي راځي
د پېغلـــو پـــدل مات وي واهمـــــې له زړو وتلي
گـــودر تـــه د منگيـــو کتـــارونـــــه وي راځي
د پاس شمال را سم سي سره ماتي کـــړي وريځـــي
پـــر خنـــډه د آسمان بـــوډۍ ټالـــــونه وي راځي
تياري خورې ورې سي د ظلمت پـــردې سي پورته
د لمر ستـــرگـــه ښکاره ســـي سهارونه وي راځي
تودوخـــه ســـي برلاسې منجمد زړونه اوبه سي
لښتـــي لـــه محبتـــه ډک مـــوجـــونه وي راځي
خړوب سي وچ دښتونه زرغونې سي وچـــي درگي
خزان کـــوچ ســـي لـــه ملکـــه بهارونه وي راځي
حسرت توري[25] واخلي غم انــــدوه ورسره مله وي
عشرت يې پر ځاى ميشت سي نعمتونه وي راځي
جـــرگـــې تـــه راروانـــي وي ټولې د اولسونو
لـــه هـــر لـــوري د ســـولي پيغامونه وي راځي
غـــوږو تـــه مـــي راځي له هري خولې پخې خبري
پـــر ژبـــو لـــه يـــوه مخـــه پندونـــه وي راځي
ستومان خاطر مي کښېني د رحمت تر چنار لاندي
لـــه هسکـــه د رجاوو شمـــالـــونـــه وي راځي
رښتيا مي درځه غوښتـــى دئ خالقه خوب که خيال دئ
پـــر ژبـــه د معصـــــوم چـــي ارمانـــونه وي راځي

======

اوکويل – کاناډا – ۱۹۹۷ع

[25] توري : د (ژوري) پر وزن

(c) ketabton.com: The Digital Library



# په روڼو سترګو

ولي مي پرې کېږي د وجود په رڼو سترګو
شلېږي تانسته د تار و پود په رڼو سترګو
وزي مو له بېخه د حسب و د نسب رېښې
پوه نه یو د ځان په بود نابود په رڼو سترګو
خېژي مو له خولې څخه غړانګې د بارکښ بوده
زمور خیال چي نغمه ده د داؤد په رڼو سترګو
مه کوئ پلمې په لوی لاس وزر له محفل څخه
سم دم ورانوو حد و حدود په رڼو سترګو
اور د محبت بویه که تود غواړئ د پلار نغرى
مه شوړوئ سترګي په تور دود په رڼو سترګو
زه به د خلیل لاره پرې نه ږدم څو ژوندی یمه
خیر که مي رقیب بولي نمرود په رڼو سترګو

======

اوکویل - کاناډا - ۱۹۹۷ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



# د مزار شریف د فتحې په مناسبت[26]

زېرى زېرى هيوادوالو وطن بيا يــو مــوټي کيږي
دا ګشن بيا زرغونيږي د اميــد غـــوټۍ غوړېږي
اولسو لاسونه ورکــړل د واحـد وطــن پـــه هيله
د ميـــرويس پر کــور جرګه ده افغانان رابلل کېږي
لوټماران د هست و بود مو کوړ مغزي له ملکه وزي
سوداګر د خپلواکۍ مو په شرمو سره شــرمېــږي
سرې فتنې د يرغلګرو سوې رسوا په ګران وطن کې
د روسي تاړاک خپسـکه مـو لــه زړونو ولاړېږي
دا د جهل و ځان غوښتــي پــه لمبـو سوي ښارونه
د وحدت پــه اوبــو ختـو لــه تاداوه ودانېــږي
پر تتــۍ لــوېـدلــي هيلي سمبالېږي درېدو ته
وزرمــاتـــي ارزوګانـــي الــوتـــو تــــه تيارېږي
ژړېــدلـــي اميـــدونــه جـوړوي ځان و خندا ته
مــروري طالــع ګانـــي بيا لـــه سره پخلا کېږي
د نفاق د کڅوک ټپلــي د وطن لـه ښکلـــي مخه
د يـــووالـــي پــه مــرهـم به له يوه مخه پاکېږي
نښاني د مايوسيــو محــوه کېــږي له څېرو څخه
قافلــې د ناميـنـديــو لــه کـــورو څخه بارېږي
دا په ټونګ د بېګانه وو مات مغزي و پرې هډونه

---

[26] دا شعر هغه وخت وويل سو چي د مزار شريف ښار د طالبانو له خوا د جنرال ملک په همکارۍ ونيول سو او د (ملت بابا ) په ګډون د هيواد د تماميت د بشپړتيا ټولو پلويانو د دې سوبې هرکلى وکړ، خو له بده مرغه څو ورځي وروسته څرګنده سوه چي دا پېښه د هيواد د دښمنانو ګډه دسيسه وه چي د څلورو زرو بېګناه انسانو د ژوند په بيه تمامه سوه.

(c) ketabton.com: The Digital Library



امید ده پر سته و پاک رب ته چې به بیا راپټلسېږي
د کلـــونـــو کـــړېـــدلـــي ځـــورېـــدلي اولسونه
لـــه شمالـــه تر جنـوبه غیږ په غیږ ورځي مسیږي
مصممـــي ارادې دي اېلـــوي بـــد مغـــز خیالونه
ککـــرۍ د ســـرکښانـــو د توحید پښو ته ټیټېږي
نظر مه کـــړې پاکـــه ربـــه دا بګړۍ دا دسمالونه
له عظمتـــه ډک رنګـــونـــه د پلـــرو راپه یادېږي
میندې مه کړې باندې بورې چې راوړي دا اولادونه
خویندې مـــه کړې باندې وراري دا ځوانۍ دې نه رژېږي
پر تیک فال بانـــدې یې نیسۍ د وحدت دا خوځښتونه
د سمسور کال نښانې خو له پسرلي څخه ښکارېږي
اورېدلي مې له نیکانو چې سهار وخت د قبول دئ
باري زبه تاته ژاړم لـــوی سهـــار بلبل چیغېـــږي
بل درد نه لرم په زړه کې تر ایمان وروسته وطن دئ
ته حامي د دې ملت سې د اغـــزو پـــر ســـر تېرېږي

======

اوکویل – کاناډا – ۱۹۹۷ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



# کنګل خيالونه

يو مخ سکون دی چوپه چوپتيا ده
نه د مچ بوڼ سته نه شور غوغا ده
تياره خپره ده، د ژمي شپه ده
سپوږمۍ خپه ده نرۍ تې شا ده
خلک بيده دي ته به وا مړه دي
يو زه ويښ ناست يم شعر مشغولا ده
اسمان وريځ دئ ستوري نهام دي
مځکه کنګل ده تنا بربنا ده
ناست يمه دلته زړه مي وطن کي
په غم يې زانګم مل مي ژړا ده
پر وطن اور دئ سکروټي اوري
د ژوندون بيه مفته ورېا ده
رحم هيڅ نسته وروري ده ورکه
عاطفه مړه سوه نن يې پاتا ده
مسخه دي زړونه د انسانانو
جنګ پر غله دئ هدف دنيا ده
يوه خبره مي پر خوله راغله
تريخ حقيقت دئ رښتيا وينا ده
پر ملت تولو سوټي را کښيلي
د سپو فقير ته يوه سلا ده

======

اوکويل - کاناډا - ۱۹۹۷ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



## فتنه

لوی فتنه گر راتـــه فتنه د دښمنـــۍ جوړه کړه
ما د پـــرون قـــد سازاوه ده ننۍ جـــوړه کړه
ما ویل جـوړ کـه و جانان تـه د سرو زرو امېل
ده خـــدای ناترسه د سکروټو گردنۍ جوړه کړه
ما د کهـاله مشـــر بالـه واک مي د ځان ورکړلی
ده زما له گرالبو و خپل ځان ته امیانۍ جوړه کړه
زما د خیالونو تاج محل ته مو پام ستـه نیازمنو
له سپین صدفه یې د خاورو کوټنـــۍ جوړه کړه
لومه یې ســر کـړه د تزویر زما د ښکېل له پاره
په سیاست ونه سـوه، نـور یې ژبنۍ جوړه کړه
راخخه ورکه یې کـړ د پلار و د نیـکه وطن مي
له مــوقتـي ملکه یـــې مینه مورنۍ جوړه کړه
وې درولـــــې ځانته دنگې دنگې ښکلې ماڼۍ
و خوار ملت تـــه یې جونگړه موڼانۍ جوړه کړه
د غوا و غیلو د گلــو و د رمــو شپــونــکیـه
هوس د تخت دې کړ جگړه دې کورنۍ جوړه کړه
سمدم یې وینمه د زهرو او گنــډ یـــرو ځُم دئ
دا چې په خپل خیال یې گڼیو ته گاڼۍ جوړه کړه
پر څه بې مهرو محبتـــه تېـر پېښ یـــم خلکو
چې له میرې یې راته نن مور سکنۍ جـوړه کـړه
د زړه زخمونه مي په اوښکو نمکینو مینـــځـي
ناپوه طبیب وایي نسخه مي یونانۍ جـوړه کـړه
ته وا چنبلي یې پـــه تـولــو لېـونۍ اوبه دي
چې لار و لیکه یې د ژوند هم لېونـــۍ جوړه کـړه

(c) ketabton.com: The Digital Library



قيامت معلوم سو اسرافيل دي نور شپېلۍ نه وهي
د عرصات ميدان يې مځکــه افغانۍ جوړه کړه
د رونبو شپو سترې ستومانه شاعر خپل بياض ته
د وينو اونبکو له تـرکيبــه مشوانۍ جوړه کړه
پر وبشگر ږغ سو چي معصوم که دئ ماشوم خو نه دئ
وې لــه ازلــه يــې د ده برخه کوچنۍ جوړه کړه

======

جمعه ۱۳/فبروري/۱۹۹۸ع کال/ د سهار ۴:۳۰ بجې
اوکويل - کاناډا

(c) ketabton.com: The Digital Library



# د خولګۍ ټکور

نه سرد ټپټپېد ولرم نه ژبه د زاریو
جنون ټکوروم په اورونو د خولګیو
یو ښکلو ته تسلیم یم بل عشوې ته د خوبانو
ځواني رارېغوم لښکروهمه د پیریو
شبابه توره ډال سمبال وه بیداره اوسه
زرښت نغم کیندي وقلمرو ته د ځوانیو
سباځم اجاره د ګلاب پاڼو ټوله اخلم
سرې اوښکي د شبنم پیوندوم په خوشالیو
غالبه باندي مینه د لیلا چي مچول ئې
کنه مجنون وپوه چي خولې مرداري دي د سپیو
قصورمي دئ د ختیي چي په مینه کي یم پاته
غروردئ په میراث راپاته سوی د پېرېو
تیارې دي تروږمۍ دي تېرې تیرې دي پښې لوڅي
قدم ږدم پرسکرو ټولا روهمه پراغزیو
محتاجه، سرګردانه، لالهانده ، وږی تږی
نه لاس د مرستي سته ،نه اراده د مرستندیو
داړوراته نیولی دئ کمین په لویه لارکي
پرهرګام واهمې دي راته پټي د غدیو
نېستۍ دي ، بې ارزۍ دي، دیدنۍ دي، نامبندۍ دي
پرسرراسره د رومي لکه چترد ژلیو
سینه مي کوه قاف ده حوادث پکښې ورکیږي
لمن کي مي اوسېږي پرګنې د شاپېریو
ډبوې به سي بلي د ماضي په مستقبل کي
که پاک خدای وژغورلم له فتنو څه د پردیو

======

اوکویل - کاناډا- ۱۹۹۸ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



# د مينې مينه

پرون يوې مېرمنې د اوکويل[27] راته ژړل
رازونه يې د زړه په ډېر حسرت بيانول
ويله يې (چې زړه دي خوړل کېږي خپل وطن ته
په سترګو کې دي ښکاري، ارمانجن يې خپل ګلشن ته
زه هم مقدراتو راوستلی يم دې ځای ته
ډولۍ د سرنوشت کې يې راوړې حرمسرای ته
واده مې نتيجه وه د اوږدې اورنۍ مينې
د بلې مينې ځای نسته په زړه کې خدای مې وينې
هيڅ راز مشکل و ستونزه نه لرمه په ژوندون کې
پر کار باندې ولاړه، وظيفه مې په روغتون کې
پر کور باندې مې ناست دئ مرغ د ښو و د ښاديو
مفهوم نه پېژني زمونږ کورنۍ د ناميديو
په لونړو په زامنو په لمسيو يمه پښه
بې عيش و بې عشرته نه لرم بله ورهنه
که ناز دئ که نعمت دئ شپه و ورځ راباندې اوري
شمال د نېکمرغيو راځه نښلي له هر لوري
اوريځې د طالع مې سم پر سر راسره درومي
باران د سعادت زر و زېور راباندې لوني
په ژوند دې خدای راضي سي يم له سياله سره سمه
په تن روغه رمته، په قد يمه سمه دمه
خو مينه د خالپوخو نه هېرېږي له انسانه
شکونه د اړيکو يې هر ګوره ډېره ګرانه

---

[27] اوکويل (Oakville) د ټورنټو په لويديځ کې يو کوچنوټی ښار دئ چې وګړي يې زياتره انګليسي الاصله دي خو پرتګاليان، ايټالويان او نو اروپاييالاصله کاناډايان هم بکښې اوسي.

(c) ketabton.com: The Digital Library



بېلتـــون نـــه دئ، پـــوهېـــږمـــه ژوري دي رګو ته
زبېښـــــي د وجـــود وينـــي لـــړزه اچوي لاسو ته
څلوېښت كـــالـــه پوره سول كاناډا كي چي ميشته يم
فقط زه چـي وام اوس هم په دې ملک کي مېلمنه يم )
په سترګو كـــي يې اوښكي د حسرت سره حلقه سوې
يو څو غـتيي دانـــې يـــې ګـــرېـــوانه ته ور شوه سوې
په غـــرېو نيـــولي ږغ يـــې راتـــه ووې (افغـــانـيـه
زما كـــورټ هېـــر سوى نه دئ نيدرليند تر دې ګرېه
كـــه نن وي كـــه سبـــا وي رســـــوم به ځان وكور ته
پاک خـــداى مـــي دي نه اچوي د بل وطن و ګور ته)
زما خيال ســـو چي دا زه يم چيغي كړم پر غرو رغونو
د دې وينا غبـــرګـــون دئ زمـــا د خپلـــو فريادونو

======

اوكويل - كاناډا - ۱۹۹۸ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



# تنګه قافیه

په وږمــونــو کــه الیش د باروت بوی سي
پر کهالــه بــه مــي ګویا (ږېرې د زوی سي)
په باڼــو بــه ورتــه لــویــه لار جارو کړم
که د سولي د ایلچــي مــخ زموږ پر کوی سي
د وطن د مینــي مــی شــراب طهــــور دي
په یوه څاڅکي یې درست جهان خوشبوی سي
پام ! چي ورنــه کــړئ اختیار ظالم یــزید ته
عاشــوره بــه مــو اختــر، کربلا طوی سي
کــور کهــول به پکښې پڼ نه سي هیڅکله
د کړدی کــه چیــري مــراندي سره توی سي
چي د ننګ پــه بیــه پېــري لــنډ عیشونه
موږ یې نه کړو، دا چړچې خــو دي د دوی سي
له هــغــه تبــره لاس پــرېــولــی نه دئ
کــېِ[28] حیا پــه بــې آبیــو شست و شوی سي
د پښتــو متــل مصــداق خــو مي نن وکوت
(لوی کورونه به کوچني، کوچني به لوی سي)
په سل کاله ریاضت بــه تــرې خلاص نه سي
غلامــي کــه د یــو چا یــو ځلي خوی سي
قافیه سوه باندي تنګه[29] معصــــوم چوپ سو
پر پرېږدئ زړه یې د کوټلــو وینــو جــوی سي

======

اوکویل - کاناډا - ۱۹۹۸ع

---

[28] کې = که یې

[29] په پښتو او فارسي ادبیاتو کي د (قافیې تنګوالی) مجازاً د (عاجزۍ، بې وسۍ) په معنا کارسوی دئ. دلته یې اصلي او مجازي دواړي معناوي په پام کي نیول سوي دي.

(c) ketabton.com: The Digital Library



## نهه توره

چي پــوه ســوی يم په سپينو او په تورو[30]
ځي پــه لپـو لپـو اوښکـــي مي تر تورو[31]
نه له چا ســره پــه ژبــه يــم پــوه سوی
نه مي سر خلاص سو له چا ســره په تورو[32]
دا رقيب دئ چـــي نفاق کــري په منځ کي
زمـــوږ په نزد نسته توپير د سپينو تورو[33]
که قصـــور د باغوان نـه دئ نو د چا دئ؟
شنه باغونــه سول بدل پــه شاړ و تــورو[34]
له متغ څخه خوند تللی کــه لــه خولو څه
که مــزه تللې يــو مــخ لــه سپينو تورو[35]
چي ټـګـــې برګـــې تــه ګورمه د خلکــو
وام نيولی مي وای مخ يو مـــخ پر تورو[36]
چي ترلای نه سي تانګ او شـهسوار وي
خود بې قدره به زين آس وي تــر شا تورو[37]
د تقـــوا په لافو شاپـــو يـــې تېـر نه سئ
دا نامـــرد دئ ګناهګار تــر ډېــرو تــورو[38]

======

اوکويل-کاناډا-۱۹۹۸ع

---

30 په سپين و تورو پوهېدل يعني د تميز سن ته رسېدل.
31 توري دلته د سترګو په معنا دي.
32 توري دلته د حروفو په معنا دي.
33 تور دلته د تور رنګ په معنا دئ.
34 توري دلته د شاړو په معنا دي.
35 سپيني و توري دلته د غوښو په معنا دي.
36 توري د کندهار ښار شمال ته د غرونو يوه لړۍ ده
37 شاتوري دلته د خرو په معنا دي.
38 تور دلته د متهم او ګناهګار په معنا دئ

(c) ketabton.com: The Digital Library



# زخمي نارنج[39]

یارانو ! ما محفل ته تش لاسونه دي راوړي
له باغه د نارنج مې وچ ښاخونه دي راوړي
گرم نه یم ملامت نه یم قلم مې ویني ژاړي
بیتوکي مې زخمونه و دردونه دي راوړي
له لویه کندهاره بیا تر لویه ننگرهاره
تاریخ د دوو نارنجو داستانونه دي راوړي
یو قصر د نارنج و بل نارنج باغونه
یو پټه خزانه او بل لعلونه دي راوړي
یو لوټي لوټي پروت دئ بل دئ پاڼي پاڼي پاڼي
له جوره یې د هسک شکایتونه دي راوړي
نارنج دئ دړي وړي و هډه ده ورانه
له خپلو له پردو یې فریادونه دي راوړي
له بوټو و له کاڼو چیغې خېژي اسمانو ته
افغانه ! ستا له لاسه مو ډک زړونه دي راوړي
ماحول درته اور دئ تکي لوېږي پرې د پاسه
اسمان له ډېره خښمه توپانونه دي راوړي
برېښنا اورونه لوني و تناوې زهر پاشي
په خاخکو کې یو مخ درته مرگونه دي راوړي
وطن دې کربلا دئ عاشورې دي اخترونه
زمان و مکان دواړو آفتونه دي راوړي
ازل لکه چې ته یې بس غمو ته پیدا کړې
تقدیر مگر ستا برخه اجلونه دي راوړي
درجار سم درواړي سم سترگې لړ شاني کړه خلاصې
چې چا درته اغزي و چا گلونه دي راوړي

---

[39] دا شعر په تورنټو کې د نارنج گل په مشاعره کې ولوستل سو.

(c) ketabton.com: The Digital Library



چا سر دربار ته ورکړ، چا دي کښېښنو و چا خرڅ کړې پر دښنه وو
چا پت کړ در خوندي چا پېغورونه دي راوړي
چا خپلو کې وندې کړې څوک دي بولي و وحدت ته
چا غبرږ کړ درته خلاص چا نفاقونه دي راوړي
راپاته عنعنه ده له پلرو د رزمونو
تاریخ کي مي نصیب انقلابونه دي راوړي
یقین مي دئ پر دغه ازمويښت بیا بریالی یې
(هوتک) وایي ما مخکې انعامونه دي راوړي

======

اوکویل–کاناډا–۱۹۹۹ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



مه کړئ نفاق پر کرونده د ملک
قام په تباه کېږي دا خو ظلم دئ
مه ورکوئ خیال ته مې رنجک رانجه
ژبه ګونګۍ کېږي دا خو ظلم دئ
مه ږدئ پر بانو باندې د خلې بار
داغ يې پاته کېږي دا خو ظلم دئ
مه لوڅوئ ښکلې پرده پوښ دي وي
اور ځيني لګېږي دا خو ظلم دئ
مه روږدوئ قام په غلامۍ د بل
بد رسم بابېږي دا خو ظلم دئ
مه ږغوئ دا د جهالت سالار
پدل يې ماتېږي دا خو ظلم دئ
مه وژنئ دا سپې پرېږدئ ژوندي دي وي
ښار په مردارېږي دا خو ظلم دئ

======

۱۹۹۹ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



# شاکي مور

پرون مینه وه بې آبه عشق سنګسار په تومتونو
چلېدی راج د بدمستو حیا خواره چارماري وه
باد راسته د بدمرغیو بازار تود د بې لاریو
مېړني تر وړی سپک وو ننګ غیرت کلپه ایکي وه
وفا ورکه، پښتو خرڅه نوغی پوري په وروری و
تقوا کونډه، زهد یتیم و د حق لاره ریشخندي وه
د بدی پله درنه وه د نېکی ترازو خیري
د سرخېلو سر په دار و د تور سرو سر کلي وه
د وطن مور ژړېده له بربتورو ځونړورو
خو نن حال له کهاله راغی چې له وېرو هم شاکي وه

======

اوکویل-کاناډا- ۱۹۹۹ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



## يتيمي سلګۍ

يو ته نه بلکي ټول قوم و ګدۍ مې ژړوي
چې ته مې ژړوې ګويا نړۍ مې ژړوي
سېلاب د تودو اوښکو مې ګرېوان لمبه کړ
شلېدلي خيرې ګرالبې و تنې مې ژړوي
د مات زړګي پر سر د دلاسا لاس راتېر نه سو
نصيبه! د يتيم کوګل سلګۍ مې ژړوي
تندی مې سوداګر دئ د سرو اوښکو د سپپيو
سودا د دردانو د ارزانۍ مې ژړوي
منصور زړه مې په تور د حق ويلو په دارېږي
دا عدل دا انصاف دغه رسۍ مې ژړوي
لاسونه بې قدريو بې نيازيو سره ورکړل
اجماع د بې مهرۍ و بې ارزۍ مې ژړوي
بدنامه په ازار د بې ازارو زماني کړه
چنجي به څه پوښتمه توتکۍ مې ژړوي
ګيله به له چا وکړم له عالمه که له بخته
درانه مې ژړوي سپک تر ورۍ مې ژړوي
زمان يوه صحنه ده د غمونو و دردونو
پرون لوی ژړولم نن کوچنۍ مې ژړوي

======

۱۹۹۹ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



# د قرن وروستۍ غزل

نصيب مې کهربا ده جذبوې د غم څخلې
ګرم نه يمه عالمه که قلم مې وي ژړلې
ښادي ته وا هوسۍ ده له ښکاري څه ترهېدلې
ښکالو چې زما پر ننبلې په ټوپو راڅخه ځغلې
پوره نيمه پېړۍ مې وګالل د زړه دردونه
لا ګوره چې په ما باندې يې نور څه دي ليدلي
خوښي مې مصنوعي ده په ظاهر يې خطا مه سئ
خنداوې کله کېږي په ها زړو چې وي داغلې
پېړۍ راته ختمېږي خو ښېړۍ به راسته نه سي
ما ډېر ټاپې د بدو و د ښو دي ازمويلي
لړ پام کوه اسمانه زما آه به دي نسکور کړي
دوعاوې وي د ولي يا ښېراوې د ناولي
اميد د ايمان جز دئ پرېښولای يې کورټ نه سم
که څه هم نا ميندۍ دي راته شاه و خوا خرلي
مضبوط ورته درېږه اې معصومه ژوند سېلاب دئ
دې نېزدې غتې ګرګې له ريښو څخه راکښلي

======

۳۱ دسمبر ۱۹۹۹ع
د روژې درويشتمه - ۱۴۲۰ق
اوکويل - کاناډا

(c) ketabton.com: The Digital Library



# Y2K[40]

ژوند مې تېر کړ درې بالا نیمه پېړۍ
وم شاهد د خپل هیواد د بربادۍ

ګوره کله به مې دا ارمان پوره سي
چې راسته ووینم زموږ چپه ببړۍ

======

اوکویل - کاناډا
د یویشتمې پېړۍ لسمه دقیقه
۱ جنوري ۲۰۰۰ع

---

40 په لوېدیځو مطبوعاتو کې یې دوه زرم میلادي کال په (Y2K) سره بنوونځ چې مطلب یې (Year Two Thousand) و. دلته د (K) توری د زرو (۱۰۰۰) په مفهوم کارول سوئ دئ. لکه په کیلو متر او کیلو ګرام کې چې هم د زرو مفهوم ځني اخیستل کېږي.

(c) ketabton.com: The Digital Library



# مبارکي

مبارکي راکړئ د زړه غوټۍ مې بيا وخندل
له توري دربې و دوربې څخه روڼا وخندل
د خوښۍ اوښکي مې په سترګو کې را غونډې سولې
چې د ګل مخ مې و شبنم ته د سبا وخندل
سپوږمۍ د تندرې له مدار څخه راووتله
په تک سپين مخ يې توري شپې ته په قاه قاه وخندل
خوري ورې سولې لړۍ د بدمرغۍ له هسکه
د خړو وريځو له درزو څخه برېښنا وخندل
د آه په زور مې نمرودي لمبې خاموشي سولې
له تناره څه ابراهيم خليل الله وخندل
طبيبه خيري کړه د ژوند دا زهرجنې نسخې
زما د ناسور تپ ته ناڅاپه مسيحا وخندل
بخته اواري دي که ګونجې د تندې له تخته
چې پايبوسۍ ته دې د وخت لوی شهنشاه وخندل
نامينده مه سئ لارويو د اغزنو لارو
په شرط د دي که مو زما پند ته په رښتيا وخندل
د ژوند سفر وي همېشه له کړاوونو سره
په عافيت وي، که و مل له اميدونو سره

======

اوکويل - کاناډا - ۲۰۰۰ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



# د هيلو مزار

ببرېږم عاطفې يې د طيغان په تکل نه سي
ډارېږم دا اوريځې د توپان په تکل نه سي
شاهد ياست حوادثو غاړي غرونه راځه يوورړ
خدای مه کړه چي دا ځلي د جانان په تکل نه سي
د زړه په کرونده کې بې په اوښکو اوبومه
غمگی سورکی غاټول دئ د دامان په تکل نه سي
د حورو پښتنو چيغو له مخه پلو اخلم
وام صبر مو مغول دئ د غلمان په تکل نه سي
داغونه مي پر زړه خو د لاله په شان خندېږم
دا ځکه چي اسمان مي د درمان په تکل نه سي
د هيلو و مزار ته دروم اسوېلي شنختي
چي تګه زمانه يې د کتمان په تکل نه سي
ياغي دي قريحه سوه جلوونه يې ټينګ نيسه
معصومه چي قلم دي د ديوان په تکل نه سي

======

اوکويل - کاناډا - ۲۰۰۰ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



د ۲۰۰۰ کال د جنورۍ پر د برشمه فاضل استاد پوهاند رشاد له جاپان څخه له یو لیک سره خپل یو شعر رالیږلئ و چې د (زړتیا خزان) یې نوم پر ایښئ و . د دې شعر تر لوستلو وروسته ما دا لاندې نظم وکښښ.

مه راوینې
لو یه خدایه !
بهارونه د نیازمنو
چې لانښېږي به
په هښمو په تناوو په ژلیو
د (زړتیا ) د (خزانونو )
سر توربږي باندې هیلې
یتیمېږي ارمانونه
کونډېږي کېږي ارزوګانې
غمجنېږي خوشال زړونه
په حکمت باندې مې پوه که
لو یه خدایه !
چې تا ولې؟
بهار نه دئ او به کړی
په چینو د قاف د غرونو
تا تر خضر مشر نه کړ
بهار ځله په کلونو
په حکمت باندې مې پوه که
چې ته ولې
لو یه خدایه !
ګوابنوې زموږ بهارونه
د (زړتیا ) د (خزانونو )
======

(c) ketabton.com: The Digital Library



يو ناڅاپه مې په زړه کې
دا خبره سوه راتېره
مګر ته لکه چې غواړې
چې بهار دې څوانيمرګ وي
د شباب پر برندو ښاخو
وي دې مات پر ملا دې غبرګ وي
زړتابه خو پختګي ده
تر مرادونو رسېدل دي
امان غواړئ له خاميه
چې په اور کې کړېدل دي
د (زړتيا خزان) چې ګورم
له غمګې مې زړګی دل سي
خو حکمت ته چې يې ځير سم
نو مې زړه لږ څه تسل سي
======
سکاربورو - کاناډا - ۲۰۰۰ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



## د اروېځو ګالري

غرونه غرونه
د اوریځو
دروميې دروميې
په اسمان کې
سره ماتي یې لړۍ دي
پکښې جوړ دي کنډوونه
پکښې وینم تصویرونه
پکښې ګورم انځورونه
د سړیو
دزمریو
د زلمیو
د بوډیو
الوتونکو
ډاروونکو
د اشنا ، د بېګانه وو
د کړلو ، نازدانه وو
یو ناڅاپه، په دې منځ کې
یو درنه څېره ښکاره سي
ورته ګورم
ورته ځیر سم
سمدم ((دی)) وي
هماغه چې ما لیدلی
د تاریخ پر زړي پاڼو
هغه ږیره
هغه سترګې

(c) ketabton.com: The Digital Library



محرابي وروځې پرې باندې
هماغه زمري برېتونه
هماغه امسا په لاس کې
د يو ستر منبر د پاسه
وې ولاړ په درناوی کې
ته به وايې
مخاطب يې
ټول جهان ټول کاينات دي
ورښيي ژغورنده لارې
ورښيي د ژوند رازونه
ټول جهان ته وايې غوږ دئ
منتظر يې بيانو ته
د ده پند د ده ورمو ته
عظمتونه يې و پښو ته
دي پراته پر سجده باندې
د لقمان حکيم خبرې
د ده پند ته سپکې سپاندې
زه په زړه کې هو سېږم
په کالو کې نه ځايېږم
چې دا ((دی)) دئ
هماغه چې ما ليدلی
د تاريخ پر زرې پاڼو
يو ناڅاپه باد راسم سي
سره ماتې کړې اوريځې
سره توی کړې تصويرونه
سترګې کش سي
زېږه ورکه

(c) ketabton.com: The Digital Library



برېت څوکړ سي
بګړۍ پرېوزي له ککري
امسا ولوېږي له لاسه
منبر مات سي، پسې اوړېد سي
نوکي نوکي
باد يې يوسي، ترى تم سي
زه په ځير ځير ورته ګورم
برخليک
د خپل اولس مي
پکښې وينم
په اميد اميد يې څارم
چي به کله؟
چي به چيري؟
سي پيوند دغه مات توکي
ځني جوړ به بيا تصوير سي
هماغه چي ما ليدلى
د تاريخ پر زړي پاڼو
======
سکاربورو-اونتاريو-کاناډا
۵ اپرېل ۲۰۰۰ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



نورو که خوږ کړې، څورولی ژړولی یم
خدایږو ستا مظلومو سترګو غوټ پر ملا مات کړی یم
غم دي سور لښکر دئ یرغلونه کړي داړې وهي
شکر دئ چي زه یې ټینګ مورچل ماله جات کړی یم
برخه په میراث کي د محمود مي بس همدغه ده
وار ته د تهمت یې پټه خوله سومنات کړی یم
لار د ابراهیم مي خوښه کړې باندي څمه به
خیر دئ که رقیب مي درته لات و منات کړی یم
چتر مو یم سیوري ته مي کښېنئ په ډاډه زړګي
ولي مو ناحقه تود ډګر عرسات کړی یم
قرن دي شاهد وي انتقام به څیني اخلمه
چا چي په نامه د مناجات، خرابت کړی یم

======

اوکویل - کاناډا
پیل: د شلمي پېړۍ وروستۍ ورځ
پای: د یویشتمي پېړۍ لومړۍ ورځ

(c) ketabton.com: The Digital Library



# زه ولاړ وم

د پېرېو تېر و بېر و، زه ولاړ وم
نور څوک نه وه يو پامېر[41] و، زه ولاړ وم
زمان اوښتی شاهۍ وې بدلېدلې
د نن ځوړ سبا سربېر و، زه ولاړ وم
تهذيبونه چې د آس په سوو کړل خاورې
د چنګېز چې لته پېر و، زه ولاړ وم
ورانول چې يې په ګوډه پښه ښارونه
تر نيکه په وحشت تير و، زه ولاړ وم
د اسلام په نوم يې غبرګې چلولې
عرب شاه دو شمشېر و، زه ولاړ وم
سومنات چې ښيراوه د غزني توري
هند و سند چې ورته زېر و، زه ولاړ وم
اصفهان چې جارېدی تر قدمونو
د ميرويس و محمود پېر و، زه ولاړ وم
چې توږل يې ظلمات له پاني پته
احمد نه و، بس يو شېر و، زه ولاړ وم
د اورنګ و د فرنګ په واکمني کې
هيواد ټوله په بل ښېر و، زه ولاړ وم
نغاره چې ډنګېدله د روسپالو
شوروي پر ملک چاپېر و، زه ولاړ وم
اېښاوه يې ننګ و نام د روس و پښو ته
تر کابل، مسکو ور تېر و، زه ولاړ وم
چلول چې يې پر مړو باندې حکمونه
آ حضرت د بلا هېر و، زه ولاړ وم
راج د غلو و تالانګرو چې روان و
د ستم مخ چې برسېر و، زه ولاړ وم
ميوندۍ کوښې چې يو مخ کنډواله کړې
چاراسياب و که پنجشېر و، زه ولاړ وم

---

41 د (پامېر) کلمه په ځينو لهجو کې په اوږده (ی) تلفظېږي.

(c) ketabton.com: The Digital Library



چي د (مرگ د رقص) تږي واکمنان وو
د (پکول شاهۍ) بهیر و، زه ولاړ وم
جاربدلی چي کابل تر هوسونو
د افغان خوږ ژوند گنډبر و، زه ولاړ وم
لوټېدي چي خزانې د موزيمونو
او هيواد ټوله واشبر و[42]، زه ولاړ وم
(مزار) ټوله مزرعه وه د قبرونو
شمال خپور د مرگ و مېږ و، زه ولاړ وم
(قند) و (هار) و سره ښېل کندهار غم و
(قم) باميانو ته راتېر و، زه ولاړ وم
(بدخشان) بدو خسانو لاندي کړی
د (کولاب) اثر پر ډېر و، زه ولاړ وم
د (قطغن) پر غرو خوښی وي قدغن سوي
تري په تېښته چي نخچير و، زه ولاړ وم
د نارنج وږم و کوچ له (ننگرهاره)
شين بگرام ټوله (غدبر) و، زه ولاړ وم
چي د (ترخه و پاچا) شعار جاري و
پر هر گام باندي زنجبر و ، زه ولاړ وم
وحشتونه زېږېدل له کانو بوټو
ملت ټول له ژونده سېر و، زه ولاړ وم
که ظالم و که عادل واکمن په ملک کي
سلامي زما مخ ته تېر و، زه ولاړ وم
عجايب وه په نړۍ کي يو څو څيزه
زما نوم هم پکښي شمېر و، زه ولاړ وم

صد افسوس چي خاوري کړم هغو مېږو
چي گټلی يې و نوم د فرشتو

======

تورنتو - کاناډا - د اپرېل ۲مه ، ۲۰۰۱ع

---

[42] واشبر د کندهار – هرات پر لويه لار د يوې سيمي نوم دئ چي پخوا به تل غلو نيولئ و او خلک به يې لوټول. دا کلمه په کندهار کي د (غلو او غدی) له پاره استعاره کېږي.

(c) ketabton.com: The Digital Library



# مازيگر ژیړی لمره

څه جادو دئ څه منتر دئ
مازيګره ستا په لمر کي
رسوېږي مي خاطرو ته
تخنوېږي مي احساسونه
ژړوېږي معصوم خيالونه
په ليکېږي ژړاند شعرونه
څه نسبت ستا و د حسن؟
ستا يو ژيړ زبېښلی مخ دئ
ژيړ مخ ننبه د رنځورده
يا د ګرم يا ملامت ده
د نېستمن ده د مجبور ده
ته آغاز د تاريکۍ يې
ستا سرخي يو څو شېبې ده
ته لومړی مزل د شپې يې
تياره سم په تا پسې ده
دا ښکلا دي ده په څه کي؟
دا کشکش دي دئ له کومه
مازيګره ژيړی لمره
پوه سوم پوه سوم
پوه سوم پوه سوم
مرغان هغه سره اوسي
چي يې ورته وي ښکي
په رنځ هغه سره پوه وي
چي يو شاني يې وي چړيکي
ته ډو ببرېږي په تيارو کي
روښنايي د رڼه تولېږي

(c) ketabton.com: The Digital Library

## روښې شپې

زما ورځې ماښام سوې
زما ستورې پېکه کېږي
ته مېلمه د دربېلي یې
درکوي زهر په جام کې
ته له ورځې رخصت اخلې
ځکه ویني ویني ژاړې
زه په وینو وحشت پېرم
مېږ مرداره پور تر غاړې
مازیګره ژیړې لمره
زما په رنځ و درد خبره
تر سرخې وروسته پر تا دې
ماښامونه خپاره سوي
ماته هم پېښنه له سرو ده
سرو غدی راته پاشلې
تاته سره افق په غېږ کې
تور تمونه دې راوړې
ماته سرو د سر کاسه کې
همېشه اوبه راکړې
ته ډوبېږې په تیارو کې
زه لمبېږم په فتنو کې
ته سوځېږې په لمبو کې
زه تپېږم په جګرو کې
مازیګره ژیړې لمره
زما په رنځ و درد خبره
چې پر کور مو لنګه سوې
د غدیو سره بلا ده
آرامۍ سوې راخه کډه
بدمرغۍ مو تل په خوا ده
که تپ کېږو محوه کېږو

(c) ketabton.com: The Digital Library



که له لوږه ځوړ ته کېږو
که له لوږې هلا کېږو
که د بل په لاس ورکېږو
مرور که بهارونه
که پیزې دي ژړ ګلونه
که مو مړاوي دي بڼونه
د خزان پرې چپاوونه
که اختر مو عاشوره ده
که نوروز راځه بېلیږي
که هر دښت مو کربلا ده
که یزید پرې هوسېږي
که رباب د آدم مات دئ
که درخو ناسته پر کور ده
که پتې ورک پر ولات دئ
که رابیا په سر سرتور ده
که نارنج ګل قصاصېږي
که ګلاب پر سر د دار دئ
که انار ګل مو رژېږي
که دښمن يې "لاله زار" دئ
که پسرلی مو خزان سوی
که وږمې پر کوچ ور بار دي
که نرګس پر ملا مات سوی
بلبلان مو په چیغار دي
که ښارګ د ښار پرې سوی
دود د کلیو تر سر خېژي
په ښاریانو کي ساه تول
کلیوال سره ننېږي
که کوچی په زړه غمجن دئ
که ورشو ورته اغزي ده

(c) ketabton.com: The Digital Library



که ګاونډ ورته دښمن دئ
ټېک يې ورک دئ پر نښستې ده
که له ورور سره اخته يو
که پښتو ده راڅه سپکه
که له تخته پر تخته يو
که پارسو ده راڅه ورکه
مازيګره ژيړې لمره
زما په رنځ و درد خبره
دا فتنې ټوله د سرو دي
که د خپل که د پردو دي
سرو روزلي دي ناولي
سرو زهرونه دي پاشلي
سرو مغزونه مسموم کړي
انتقام تې هڅولي
مورې ته پېښه له سره لوره
مورې ته پېښه له سوټکه
چي کرو پر پتې مينه
حاصل اخلو څېنې کرکه
مازيګره ژيړې لمره
زما په رنځ و درد خبره
زه و ته نصيب نن مله کړو
رنځ مو يو دی چي خواله کړو
======
ټورنټو - کاناډا
د مي ۱۲مه، ۲۰۰۱ع کال

(c) ketabton.com: The Digital Library



## زندۍ

که دا حال و نه به شعر نه به نظمونه پاته سي
د ادب پر کرونده بخ وچ ډاګونه پاته سي
په مرګو چي ځني وزي شهبازونه له کوڅو څه
د آدم په خيالي ښار کي به قبرونه پاته سي
چلېدلي که دُري د محتسب هسي بې واره
په بازار کي به د زهد صرف دوکانونه پاته سي
و اورېو ته چي سوې پورته جنازې د غيروتونو
د ښېنتو پر کور به خود تور دېوالونه پاته سي
ککرۍ که هسي شاني بې مېروزه رغړېدلې
د سرخېلو پر دفتر به تش نومونه پاته سي
چا منصور ليدلی نه دئ اورېدلي يې کيسي دي
زما به هم د دار په ژبه داستانونه پاته سي
عشق تا داو د ژوندانه دئ په نسب مي راشريک دئ
د رقيب پای ناميندي ده که کلونه پاته سي
د نيازمنو کوچ و بار دئ د خواله ځوک نه سوه پاته
د معصوم پر ډک زړګي به ارمانونه پاته سي

======

اوکويل - کاناډا - ۲۰۰۱ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



# دنازولوکور[43]

لا اوس هـــم باندي چغېږي ځــو بلبلي
پر ها درختو چي جګړونــــه دي سوځلي
اوس لا هم ورېږ راځــــي له سپېرو دښتو
خير که وريځو ځو پسرلي نــه دي خندلي
اوس لا هم په سرو زرو کي څه ګرمي ستـه
نامېنديـــو که هر ځـــو دي ننولـــي
لاميـــن کاته دي پاتــه پر ځـــو سترګو
پـــه کړو بنو لا اوس هـــم زړه پېيلـــي
طراوت يـــو مخي تول نـــه دئ له باغـــه
لا ځوک سته چي د نرګس جام تي نېنګلي
له ګـــړوب ښاره لا نغمه د مينـــــي اورم
ازانګي مــــــي ئي له ليري اورېـــدلي
د ريا زاهــــدان پټ ســـر پکښې ګرزي
خپلـو کړو و خپـــل عمل دي شرمولـــي
عقل کوچ نـــه دئ يومخي لـــه دي ښاره
خيـــر که کـــډو د جنون پـــــر اړولـــي
لا پر وچـــو شونډو پاته څه مـــوسکا ده
څه کـــي خاوري د ببلتون پر سر پاشلـــي
چـــي د ستـــړو قافلي پر هـــوسا کيــږي
اوس هــــم هغه چيني سته، هماغه کلي
لــــه دي ښاره نظرمـــه اړوئ خلکـــو
پکښي اوســـي اوس لاهم ډېــر نازولي

======

ټورنټو، کاناډا
۱۲نومبر۲۰۰۲ع

---

[43] د کاناډا د (NATIONAL POST) ورځپاڼي په پروني ګڼه کي د لومړۍ عمومي جګړې د يو افسر ليک خپور سوی و او په هغه کي يې يو ځای کښلي وه:
"… and yet the birds kept singing in the trees-what trees were not cut down by shells."
د دغو جملو اغېزه وه، چي دا شعر يې را باندي وکېښ. (هوتک)

(c) ketabton.com: The Digital Library



د احسان يې زما پر سر دئ همېش سيورى
چې په ژوند چا راښوولى دئ يو تورى
د سلام پر بنده وايم سلامونه
پر دارينو دې خداى نه کاندي مختورى
دا د حسن اغېزه ده بل څه نه دي
راځه ورک چې کوز و پاس ښى و کيڼ لورى
پېرزوينه د پاک رب، زيار د استاد دئ
رقيبانو څله رډ رډ راته ګورئ
همدغه وياړ راته بس دئ په ژوندون کي
چې نه مل سولم د غلو، نه هيوادپلورى

======

مسيساګا - کاناډا - ۲۰۰۲ع

(c) ketabton.com: The Digital Library



ما په زړه کې تصور کړل
د دنیا سخت کړاوونه
چې یو ځوک را څخه پاسي
په امبور د لاس نوکونه
داغوي مې پسته ژبه
پر ایږدي تک سره سیخونه
راټوکېږي مې په ماغزو کې
تېره غشي تېز سرونه
راتوږي مې تور د سترګو
پر نینک مې ږدي اورونه
پوري ووري تر زړګي مې
پاسي تک سره نشترونه
پوستوي مې په ژوندوني
پرې کوي مې اندامونه
اوروي مې پر زړه باندې
د اغـــــــــزیو بارانـــــــــونه
راکوي د سر کاسه کې
جـــــــل وهلـــــــــي مرادونه
پر بـــدن مــــې صلیب واره
ټک وهــــــــــې د اور مېخـــونه
خو یو بل درد راڅه هېر کړي
دا تول واړه زحمتونه
هغه دا چې مې پر خاوره
بېګانه رېبي توغونه

======

ټورنټو - کاناډا

(c) ketabton.com: The Digital Library



# پښتانه ته وایم

هک پک گورمه د نورو ویانه ته
د خپل اوښ په واښ ترلي زنګانه ته
هوسۍ هسي له هوسه باندي خوب کا
مېړنتون دئ خدای رازلی پښتانه ته
له یوې بلا راخلاص بلي په خوله کړ
له ناوې سو راګوښه ناست بارانه ته
د یوې ایکۍ اثر مي چیغي نه کا
لکه ښوک چي خطابه کړي تپ کاڼه ته
دی بیده، بخت یې بیده، ماحول بیده دئ
دوست دښمن یې چړې کښلي لړمانه ته
له غفلته چي رمه ټول لنګ و لاښ سوه
سزاګاني سختي بویه دي شپانه ته
که تر دغه ازموینېت هم پښتون و ووت
سلامي به یې جهان وي و نامه ته

======

اسلام‌آباد

(c) ketabton.com: The Digital Library



# دلې او هورې

دې ساړه شان پسرلي کې
امیدونه خزانیږي
د ژوندون مېوه خازه سوه
هم دلې او هم هورې
د خونخور ساقي له لاسه
جام د زهرو وېشل کېږي
قتلګاه مو میخانه سوه
هم دلې او هم هورې
د پښتون پر حال ژړېږم
کور یې وران سو لا ورانیږي
شو په شو یې قافله سوه
هم دلې او هم هورې
زما بخته، توره بخته
زمانه دې سوه دښمنه
سمه لار درته کوره سوه
هم دلې او هم هورې
په زړه خوږ له پرد ېسیه
پر ملا مات له بېکسیه
له مېړو خالي توبه سوه
هم دلې او هم هورې
خالي لاسه دښمن ته یې
ګدا خوار په مطلب پوه دئ
چې د سپو سلا یوه سوه
هم دلې او هم هورې

(c) ketabton.com: The Digital Library



لټ پر لټ اورم په ځای کې
نا ارامه، سهار لیري
هره شپه د یلدا شپه سوه
هم دلې او هم هورې
خپل احساس ورته خوراړه دئ
چې مدام په بېراڼه دئ
د معصوم دغه دنده سوه
هم دلې او هم هورې
======

(c) ketabton.com: The Digital Library



زما مېنه اولنۍ د پرېښوولو نه وه هيڅ
اورشو مي پلارنۍ د هېرېدلو نه وه هيڅ
دوستي کې[44] د پيسې پر قام دوستۍ نه واى بر کړې
پايه د ورورولۍ د ماتېدلو نه وه هيڅ
ارمان دارلامانه ناخلف دي ښتنان سول
دا ستا هسکه ماڼۍ د نړېدلو نه وه هيڅ
افسوس دئ چي اولاد يې د بابا همت ته شا کړه
کنه، دغه بګړۍ د رالوېدلو نه وه هيڅ
پښتونه! دې ناولي دنيا څه کانه دروکړه؟
دا مشکه دا رنډۍ خو د غوښتلو نه وه هيڅ
اړتيا د مغفرت وه چي خيالي سر مي سجده سو
کنه دا ککرۍ د ټيټېدلو نه وه هيڅ
بېلتون که لکه سيورى مي د ژوند ملګرى نه واى
دا ژبه مي تورۍ د شعر ويلو نه وه هيڅ

======

اوکويل - کاناډا

[44] کې = که يې

(c) ketabton.com: The Digital Library



# چې دا ولې؟

انګار مې له سینې څه نه راوزي چې دا ولې؟
اشعار له قریحې څه نه راوزي چې دا ولې؟
قلم ریچې ریچې کړم که جزدان پاره پاره کړم
یو ټکی مې له خولې څه نه راوزي چې دا ولې؟
و چاته زړه خالي کړم، غمشریک چېرې پیدا کړم
شناحته له کوځې څه نه راوزي چې دا ولې؟
په زړه کې مې لمبې دي په سوځېږمه مکوټ سوم
خولوګې له تاوخانې څه نه راوزي چې دا ولې؟
کړی شپه منتظر یم د سپېدو و چاودېدو ته
سهار له دغې شپې څه نه راوزي چې دا ولې؟
زما خیال دی اسمانونه مې هم چیغو دي اخیستې
غبرګون له ازانګې څه نه راوزي چې دا ولې؟
بس ته به وا یو مخې د ژوندیو هدیره ده
هیڅ شخول له دې مېرې څه نه راوزي چې دا ولې؟
فقط ته وا رانجه یې دي و ټولو ته ورکړې
هیڅ رږغ له حنجرې څه نه راوزي چې دا ولې؟
قاصد په تلو راتلو سو ستومان د بابا پښه مې
د مځکې له موزېٔ[45] څه نه راوزي چې دا ولې؟
زندان سو درې ورې، زندانوان په تورو تور سو
خو پښې له زوانې څه نه راوزي چې دا ولې؟
قفس ټوکر ټوکر سو، لومې وشلېدې دام لوټ سو
توتې له پنجرې څه نه راوزي چې دا ولې؟
اسلام پر هیواد خپور دئ مسلمان مو حکمران سو
خو تکبیر له منارې څه نه راوزي چې دا ولې؟

---

45 د جغرافیایي په پخوانیو کتابو کې یې (ایتالیا) ته (موزه) ویله. دلته هماغه مفهوم ته اشاره ده. (هوتک)

(c) ketabton.com: The Digital Library



د عدل و انصاف په تمه ناست وګړي ستخ سول
لوی تېګ له محکمې څه نه راوزي چي دا ولي؟
په غلو و په غدیو مو تالا تږوله ګډی کړه
یو نر له قافلې څه نه راوزي چي دا ولي؟
درخو که وایي آدم نسته، خو سته رباب په غېږ کي
حیران یم له پردې څه نه راوزي چي دا ولي؟
که هر څه یې رابولمه مېلو و تماشو ته
معصوم له غم غوسې څه نه راوزي چي دا ولي؟

======

(c) ketabton.com: The Digital Library



ښو کاله وړاندې د ایران مشهورې سندرغاړې لیلا فروهر په تورنټو کې کنسرت درلود او د کنسرت په ترڅ کې یې یوه پښتو سندره هم وویله، په هغه وخت کې د کابل واکمنانو پښتو دښمنه پالیسي چلوله. په دغه شان حالاتو کې د لیلا فروهر له خولې پښتو سندرې ویلو پر ما اغیزه وکړه او دا ښو بیته مې فی البدیهه وویل.

نازم ازینکه باز چه زیبا شده پشتو
با نغمه حزین که یکجا شده پشتو
کم ارج در بساط سیاست که شد چه باک؟
در جمع هنردوست پر بها شده پشتو
یاران دهید مژده به آن قیس غوریان
کاکنون پسند خاطر لیلا شده پشتو

(c) ketabton.com: The Digital Library



# خوندونه

# و

# شخوندونه

(c) ketabton.com: The Digital Library



ما دا ځلوریځې په مختلفو وختونو او بېلابېلو حالاتو کې ، په هیواد کې دننه یا تر تیواد بهر ویلې دي. هره یوه یې جلا – جلا انګېزه لري. دلته مې یو ځای سره نښلولې.

(c) ketabton.com: The Digital Library



شعر څه دي د احساس راپارېدل دي
د خونخور فلک له لاسه ژړېدل دي
یا د مینې د خیالونو په بستر کې
راز و نیاز دئ اوښتل را اوښتل دي

======

سوله چې شرط یې زموږ غلامي وي
یا مو په دې شرط، څه ارامي وي
سل واره جار دې تر هغه جنګ سی
چې ارمغان یې زموږ ازادي وي

======

جګړه که هر څو ډېرې سختۍ لري
ماتې و ګوډې، ژوبلې ورانۍ لري
ټولې مو ځکه پر ځان منلې
چې راته زېرې د خپلواکۍ لري

کابل-۱۴لیندۍ۱۳۷۵ش

======

زما د سر امان دې وي تاجرزاده یم
او له پلاره و نیکه عالمزاده یم
زما اسې برخه نه دا سوه او نه هغه
خالي لاس یمه، امې مادرزاده یم

۲۳ د غبرګولي ۱۳۷۵ش

======

(c) ketabton.com: The Digital Library



څه عجبه حوادث دي چې تيرېږي
يو د بل له پښو څه خاوري ايستل کېږي
ما چې هر څه دئ خپل فکر ځغلولی
دا منګی بيا د پښتون پر سر ماتېږي

کابل - ۱۳۲۵ش

======

هک حيران يمه غافلو پښتنو ته
د دا نورو زرنګۍ، فريب و چلو ته
که چرچې وي پښتانه د چا په ياد وي؟
چې پر غرنده سي، مخ يې سي پښتو ته

کابل - ۱۳۲۵ش

======

ستاسي په نزد به خوار نتلی يم
پر هر ميدان به رقيب کړلی يم
خو وخت شاهد دئ، تاريخ خبر دئ
چې په مېړانه تولو منلی يم

======

اې قدرتمنو ! اې جابرانو
په نشو مستو، اې کورمغزانو !
قدرت زوال لري، نشې الوزي
سد مو کوره سه، اې ناپوهانو !

======

(c) ketabton.com: The Digital Library



مات دي مغزی سه، په خوا دي مرگ سه
آ په زړه توره! اینه دي گرگ سه
چي نه سوځېږي په آه د کونډو
سر به سر تور کړم چي توی دي ورگ سه

======

نن چي يې ويني د ملک رهبر وي
ډب يې مغزن وي برېت يې ببر وي
د زمان لوبه سي ورته جوړه
په تورو تور سي، خاوري پر سر سي

۱۳۶۵ش
======

ښايستې! څله په ځان مغروره يې
په دې چي ځوانه يې؟ پيدا له نوره يې؟
که دا جگړه وه او دا مرگونه وو
يا به يې کونډه او يا به بوره يې

======

عشق يو اشا ده، سر و پښې غوځي
ژړاند کوچنی دئ، ښونډې يې بوځي
د خوار تلتک دئ، پرده پرې نه سي
چي سر په پټ کړې، پښې دي سي لوځي

======

(c) ketabton.com: The Digital Library



غمو رنځور کړم، سختیو زوړ کړم
ډېرو مرګونو له ژونده موړ کړم
ممکن خو نه دئ غچ له تقدیره
خدایه! دا زړه مي په څه شي سوړ کړم

======

چوپه چوپتیا ده، خطر هر آن راځي
یو مخ بامبو[46] دئ، ته وا خپګان راځي
له هوښیارانو مي اورېدلي دي
په خاموشي پسې ضرور توپان راځي

کابل د لوی اختر سهار ۱۳۲۲ش

======

عمر ځلوېښت سو مخ پر زړښت یم
مزه یې نسته که ځوان په سکښت یم
څوري د پوهي مي زښته سپک دئ
څښتن د برخي که پښت پر پښتې یم

======

آ لویه لویه، څښتنه لویه
ژر رسوه مي تر خپله کویه
که مستجاب مي دغه خواست نه وي
ژوندون به څه کړم مرګ راته بویه

======

[46] بامبو: مطلق سکوت

(c) ketabton.com: The Digital Library



آ د څو ورځو په جاه جلال مسته
آ چې اچوې مرداري و خپل نس ته
اولنو پښتنو څومره ښه ویلي
دا متل دئ (که هوس و نو دي بسته)

======

ته بنګړیو شرنګی ډېر وې په پایزېب کې
ادعاګانې وې اوچتې په نشېب کې
د واکمنو قول و فعل ته چې ګورم
زه له شرمه پزه ګرزوم په جیب کې

======

که ظالم غرّه په ظلم و په زور دئ
یا دا بل بیا خاتما په پردي کور دئ
نه به ظلم ورته پاته نه به زور وي
د ستم کور آخر وران، چپه نسکور دئ

======

په مغزو کې مې هرګوره شورماشور دئ
ستونی تل له غرېوه ډک همېشه شور دئ
د سکوت څواک راڅه تللی دئ معزور یم
ازمویلی مې پر ځان باندې خپل زور دئ

======

(c) ketabton.com: The Digital Library



خوشالي زموږ د اختر په ډمامو سوه
په خوراک و په څښاک و په جامو سوه
زما اختر به هغه وخت وي اې یارانو
که مو پاکه له پردو څخه اورشو سوه

کابل - ۱۳۲۵ش

======

زمانه راته نا پایه لوی دریاب سو
سراسر ژوند منجنیق سو منجلاب سو
بېگانه یې کړم له خپل و له پردیه
راته پاته یو قلم سو یو کتاب سو

======

نه قدرت د خوځېدو سته په لاسو کي
نه مستي نه تحرک پاته په زړو کي
چي دا نن ملک الموت راسي په خوښ یم
ما د دمخه ځان شمېرلی دئ په مړو کي

======

نه دا وایم چي دنیا مي د قارون وای
په عزت په دبدبه کي ناپیلیون وای
باطني هیله مي دا، چي د خپل سر وای
د خپل واک د خپل اختیار وای خړ پړ شپون وای

======

(c) ketabton.com: The Digital Library



د وصال په قهر پوه دي مهجوران
د خپل کور په خوند خبر دي پردېسان
پر لوحه د ژوند يې کښلي په غټ خط دي
(له زواله څخه وروسته وي ارمان)

======

پر ډگر د سياست چي چا گام کښېښنو
و راستۍ ته يې (فقط) د انجام کښېښنو
عنايت دئ د پاک رب چي ځني خلاص يم
که نه، ډېرو راته لومه و دام کښېښنو

======

چي يو آن ځان له عالمه بېگانه کړې
ماديات له يوه مخه درست ايله کړې
په لذت به دي ټول عمر خوله خوږه وي
په والله چي بيا (ډوډۍ پکښې ريزه کړې)

======

آزادي چي له يوه مخه نېستي سي
ابتذال و جهالت چي پر زياتي سي
اختناق و رسوايي هم سي ور گډه
ځني جوړه به د نن (ولسواکي) سي

کابل - ۱۳۶۵ش

======

(c) ketabton.com: The Digital Library



زاهدان ورپسې ګرځي په محراب کې
نجوميان يې لټوي په اسطرلاب کې
عالمونه سرګردان ورپسې ګرځي
ها خوندونې چې ليدلي په شباب کې

======

د فراق ورځې ډېرې اوږدې سوې
په ډېرو شولو مې کولمې پرې سوې
په ډېرو چغو مې کومی وچ سو
په ډېرو اوښکو سترګې کوکرې سوې

======

په ورکينه مې تمام کړل کتابونه
چې لږ غټ سوم بيا مېلې وې او ښکارونه
په سړ کال چې مې يو کم څلوېښت پوره سوه
مشغولا مې په قلم وايم شعرونه

کابل- ۱۳۲۵ش
======

چې پرون يې د زړه غوښې پر پېرزو وې
نن يې مخ ته په کفن کې لا نه ګوري
دا په دې چې پرون کار عند اللهي و
نن د نفس و د شيطان په نغوته ښوري

کراچي- ۱۹۹۰ع
======

(c) ketabton.com: The Digital Library



کالخوایان مو د وطن، شل ته رسېږي
د قدرت پر ګدۍ نه سره جوړېږي
عاقبت مو دې په خیر وي، متل وایي
(قصابان چې سي ډېری مږ مردارېږي)

مونتریال-کاناډا - ۱۹۹۲ع
======

نن مې په زړه کې یوه چړیکه پنهاني تېره سوه
د پښو دردونه راته وایي چې ځواني تېره سوه
ځواني یو خوب و یو خیال و هیڅ په پوه نسومه
تېره خو سوه مګر افسوس په ناداني تېره سوه

======

د ریا په غلافو کې تقواګاني دي خرڅېږي
زنهار وینمه د ږیرو په درزونو کې ځلېږي
پټوي زما له نظره په پردو محرم مخونه
آیینې یې خپلې توري نور هم تور ورته ښکارېږي

مغل رستورانت- ټورنټو -کاناډا - ۱۹ فبروري ۱۹۹۹ع
======

تفاوت راځخه ورک سو چې دا غم دئ که ښادي ده
پلوونه دي بادېږي د اسراف پر سر سیالي ده
هلته وږونه مري له لوږي دلته موږ په غوړو لامبو
دا نه ننګ دئ، نه مېړانه هسې خوشي ناپوهي ده

اوکویل-کاناډا- ۱۹۹۹ع
======

(c) ketabton.com: The Digital Library



د اولس ښاغلي سپک په بيده قام وي
ويښ قومونه خپل مشران ستايي په نېکو
هوښياران اواروي لانجې په سوله
مورږ دي توري تر خپل منځ کښلي له تېکو

======

چي د ميني پر معيار مي
تا او گل ته وکتله
گل مي خوښ سولی یو ځلی
ته مي خوښه سوې تر تله

(د يو فرانسوي شعرژباړه )

======

کراچي نه دئ د اور تبۍ ده
لاس و مغزي ته ولچک زندۍ ده
د ازل کښلو رواستم دلته
تقدير ته غاړه تر تار نرۍ ده

کراچي - ۱۳۲۸ش

======

په وطن کي مي کتاب و مشغولا
له قلم سره همېش وم همنوا
په دي ملک کي علم نسته قلم ورک دئ
مشغولا مي ده د کور سود و سودا

======

(c) ketabton.com: The Digital Library



حافظه مې ورځ په ورځ کمزورې کېږي
روښنايي د سترګو دم په دم کمېږي
شين امې به راشه جوړ سې په دې ملک کې
ها چې زده مې وو، ورو ورو راڅه هېرېږي

کراچي-۱۹۸۹ع
======

## د تجزيې خطر

ما يې غم کړ د تاريخ چې مسخه کيږي
مفاخر مو د وطن ټوله هېريږي
يو هوښيار سړی موسکی سو، ول لاليه
تاريخ څه جغرافيه مو محوه کيږي

اوکويل-کاناډا- ۱۵اکتوبر ۱۹۹۲ع د سهار ۴ بجې
======

## د نغري قدر

نصيب راپردېس کړی يم،کارونه تقديري
وېنه د بې لرزۍ مې کړی ورځ ماغزه را خوري
قربان د اولنو تر دا پخو پخو خبرو
(مړونه قدرمن وي پر خپل کور پر خپل نغري)

ټورنټو-کاناډا - ۱۹۹۷ع
======

(c) ketabton.com: The Digital Library



زما وطنه ! تېر کال هم دلته را یاد سوې[47]
سږ کال هم دغه ځایګی خو ته آزاد سوې
له دې وروسته که پښتون یو موټی نه سو
نو به لوی جارو وهمه چې (برباد سوې)

پنجاب - ریل ګاډی - ۱۹۹۲ع

======

څه فایده ده د ارمان و د ایکاش
د ناشکرو خلکو وي همدا پاداش
ښپږ اوه پښته میشته پر کندهار وو
نن أر ټوله کُره تیت یو لکه ماش

میسیساګا -کاناډا -۲۰۰۲ع

======

پر وطن باندي مو سږکال وچکالي ده
رحمت نسته څکه ورکه سوکالي ده
باران رحم دئ پر هغه اولس اوري
چي سینه یې له کینو څخه خالي ده

======

[47] زه په ۱۹۹۱ع کال له پنجابه په اورګاډۍ کي کراچي ته تلم د وطن یاد مي یو شعر ووایه چي د همدې مجموعې په (38) مخ کي راغلی او نوم یې (را په یاد چي سې وطنه) دئ. په دا بل کال ۱۹۹۲ع په هماغه میاشت کي بیا پر هماغه ځای په اورګاډۍ کي تېرېدم. په دې وخت کي په کابل کي د مجاهدینو حکومت و. ما پورتنۍ روباعي وویله.

(c) ketabton.com: The Digital Library



لوی غټ سړي یو نه د خاپوړو
تونگ د شیطان دئ چي سره مروړو
لاره د حق مو ده خوشي کړې
رحمت يې غواړو تش په ارگوړو

۲۰۰۰ع
======

ترقي د اولسونو هوسايي ده
امنيت دئ، ارامي ده کراري ده
چي دا نه وي هيڅ باور به يه ونکړم
تش خبري دي، دروغ دي لفاظي ده

کابل - ۱۳۲۱ش
======

پای

**Get more e-books from www.ketabton.com**
**Ketabton.com: The Digital Library**